हिन्दू विश्व

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

वर्ष 19 अंक 18

अक्टूबर 01-15, 2016

आश्विन शुक्ल (शारदीय नवरात्र) पक्ष

वि. सं. 2072
युगाब्द 5117

संरक्षक मण्डल
श्री विष्णुहरि डालमिया

सम्पादक
मानवेन्द्र नाथ पंकज

परामर्शदाता
सर्वश्री
डॉ. नन्दकिशोर त्रिखा,
राजेन्द्र शर्मा,
धर्मनारायण शर्मा, विजय कुमार

व्यवस्था - श्री दूधनाथ शुक्ल

मो. -09582555152

सज्जा - श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम,
प्रभाग - 6
रामकृष्ण पुरम्,
नई दिल्ली-110022-05
दूरभाष : 09582555152
011-26178992,
011-26103495
ईमेल-hinduvishwa@gmail.com

वैधानिक सूचना

- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए .....$ 50 USD
वार्षिक डाक व्यय सहित
एक प्रति .....10 ₹
वार्षिक .....200 ₹
त्रिवर्षीय.....500 ₹
पंचवर्षीय .....800 ₹
दसवर्षीय.....1,500 ₹
पन्द्रह वर्षीय.....2,100 ₹

कुल पेज - 28

बुद्धि से पैसा कमाया जा सकता है; पैसे से बुद्धि नहीं
- चाणक्य

24 सरकार को राम मंदिर व गाय के मुद्दे पर समय देना चाहिए: विहिप महामंत्री

सम्पादकीय

उड़ी हमला : शर्मसार हैं हम! 04
क्या नाथूराम गोडसे ही गांधी का हत्यारा था? 05
गांधी जी की हत्या किसने की थी? 06
न्यूजीलैंड में छ: साल की भारतीय बेटी कुल्हाड़ी थामे डाकुओं से भिड़ी 07
भारत विखंडन : द्रविड़ और दलित मामलों में पश्चिम का हस्तक्षेप 08
क्या मदर टेरेसा संत थीं? 11
वेदों में शक्ति तत्व 13
विदर्भ के 19 में से 9 जिलों में इन्द्रधनुषी छटा बिखेरते 83 सेवा प्रकल्प 14
मठ-मंदिर चिकित्सा व शिक्षा केन्द्र बने, विहिप ने बढ़ाए कदम 16
तुलसी शोभायात्रा से पर्यावरण व गोरक्षा का संदेश 17
विजय पर्व का संदेश.....18
पलायन नहीं पराक्रम पश्चिम बंगाल में जिलाश: समीक्षा.....19
देवगिरि प्रांत में विहिप कार्याध्यक्ष 21
गाय रखने वालों को मुफ्त चारा देगी सरकार 24
मार्कण्डेय पुराण में क्लोनिग विषय कावर्णन 25
ऋग्वेद पर हाथ रखकर शपथ लेने वाले जितेश गढिया ने हाउस ऑफ लॉर्ड्स में रचा इतिहास.....26

मानवेन्द्र नाथ पंकज

उड़ी हमला : शर्मसार हैं हम!

17 सितंबर को जब हमारे लोकप्रिय प्रधानमंत्री अपना जन्म दिवस मना रहे थे, 17 की रात– 18 की तड़के उड़ी में सैन्य शिविर पर हमला कर पाक सेना ने सोते 18 जवानों को मार दिया। यह कहना कि ये पाक प्रशिक्षित आतंकी हैं, मैं पूर्ण सहमत नहीं हूं क्योंकि पाक सेना अपने ही सैनिकों को बगैर वर्दी भी आतंकी कार्रवाइयों में इस्तेमाल करने में सिद्धहस्त है!

कुछ माह पूर्व एक अन्य मुद्दे पर विहिप नेता ने कहा था कि मोदी को कब छलांग लगानी है, पता है। मुझे ऐसा लगता है कि गांधी–जाप करते– करते, देवीभक्त पीएम कभी सर्वदलीय बैठक, कभी अमेरिका की ओर निहारते– निहारते समाधान की इच्छाशक्ति से बाहर जैसे हो गए हैं! कृपा करके योगिराज अरविन्द घोष की कविता विदुला पढ़ें!

जिस प्रकार पीएम के लिए सोशल मीडिया में शब्दावली प्रयोग की जा रही है, मैं स्तब्ध हूं। इस तरह तो पूर्व प्रधानमंत्री मौन मोहन सिंह को भी सुनना नहीं पड़ा था। पाक से सर्टिफिकेट प्राप्त वर्ग/ राजनीतिक दल भी पीएम/ भारत सरकार को कटघरे में खड़ा कर रहा है। उड़ी हमले के लिए जिम्मेवार/मारे गए 4 आतंकी को चरमपंथी बताने वाले अमेरिका से हम आशा कब तक लगायेंगे? अलबत्ता रूस ने नाजुक मौके पर पाक का हाथ झटककर भारत से दोस्ती का प्रमाण दिया, जो प्रशंसनीय है।

मेरा सुझाव है कि पाक– चीन, कश्मीर व आन्तरिक सुरक्षा पर भारत सरकार अपने सलाहकारों के अतिरिक्त कुछ विशेषज्ञ यथा– ब्रह्म चेलानी, जी. पार्थसारथी, के0एन0 पण्डिता, प्रकाश सिंह तथा तारिक फतेह, सेंगे एच.सेरिंग व फ्रांसिस गोतिए जैसे लोगों की राय भी सुनकर त्वरित कार्रवाई की ओर बढ़े। जब दावा किया जा रहा है कि लगभग 200 आतंकी सीमा पार भारत में प्रवेश हेतु बैठे हैं। पाक सेना कवरअप देकर आतंकियों को भारत में भेज रही है, तब चिह्नित स्थल को नेस्तनाबूत करने में हिचक कैसी? पाक युद्ध की ओर हमें ढकेल रहा है, परमाणु बम की धमकी के निहितार्थ क्या हैं?

भारत सरकार जनभावना समझती है, ऐसा क्या कहीं लग रहा है?सैनिकों के बलिदान पर बयान सिर्फ बयान क्या जख्म पर नमक छिड़कना जैसा नहीं है? पाक को व्यापार हेतु तरजीह राष्ट्र का दर्जा समाप्त करना, पाक विमानों को भारतीय वायु सीमा में प्रवेश न देना तथा सिन्धु जल सन्धि तत्काल निरस्त करना भारत सरकार की इच्छा शक्ति को प्रदर्शित कर सकता है। चीन से व्यापार हेतु सामरिक हितों की अनदेखी क्या उचित है? वायुसेना अध्यक्ष तो तैयार बैठे हैं; परन्तु सरकार एक्शन/विचार– विमर्श में नौसेना/ वायुसेना को शामिल करती नहीं नजर आ रही है।

उड़ी हमला देश के लिए शर्म की बात है। क्या स्थानीय सहयोग के बगैर यह सम्भव है? कश्मीर में स्थित आतंकियों के स्लीपर सेल को दूध पिलाना बंद कर उनका फन कुचलना समीचीन होगा। पी0एम0 देश का प्रधानमंत्री होता है, उनका सम्मान होना ही चाहिए। सैन्य शिविर पर हमले करने वाले कश्मीरी प्रदर्शनकारियों/ पाक से आए आतंकियों में फर्क करना दुखद है। प्रधानमंत्रीजी/आप को छलांग कराची/स्कर्दू के लिए लगानी है; वाशिंगटन के लिए नहीं! जनभावनानुरूप राष्ट्र का स्वाभिमान बरकरार रखना आज का युगधर्म है।

(21 सितं.)

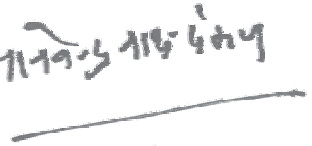

क्या नाथूराम गोडसे ही गांधी का हत्यारा था?

डॉ. ए.के. वर्मा

कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को गांधी जी की हत्या का जिम्मेदार बताकर और फिर अपने इस कथन पर अड़े रहकर नई बहस छेड़ दी है। यह एक संवेदनशील मुद्दा है और कांग्रेस को इससे नुकसान हो सकता है!

पिछले 69 वर्षों में गांधी के हत्या को लेकर एक बिंब बन गया था कि नाथूराम गोडसे ने उनकी हत्या की जो हिंदू–महासभा और उसके पहले संघ–संबद्ध था। गोडसे ने न्यायालय में अंतिम वक्तव्य में कहा था कि उसने गांधी की हत्या की और उसकी नैतिक चेतना उसे दोषी नहीं मानती।

क्या नाथूराम गोडसे ही गांधी का हत्यारा था या उसमें अन्य लोगों ने दुष्प्रेरण (एबेटमेंट) किया? क्या ऐसी

शक्तियां थीं जिनको बापू से परेशानी थी?हत्या से पूर्व गांधी पर 5–6 हमले हो चुके थे जिनका पता नेहरू और सरदार पटेल को था। हत्या के दस दिन पहले 20 जनवरी 1948 को भी हमला हुआ था, जिसमें पुलिस ने मदनलाल पाहवा और उसके साथियों को गिरफ्तार किया। उनसे चाकू और बम बरामद किए, लेकिन इस आधार पर छोड़ दिया कि इसका प्रमाण नहीं मिला कि चाकू और बम उनके ही थे। यह अप्रत्याशित था, क्योंकि 20 जनवरी की रात ही मदनलाल ने पूरे षड्यंत्र का विवरण, दुष्प्रेरकों के नाम, वित्तीय एवं अन्य मदद देने वालों की जानकारी पुलिस को दे दी थी। दिल्ली पुलिस का दावा है कि उसने मदनलाल का बयान 21 जनवरी की शाम बंबई पुलिस को भेज दिया था। भारत सरकार के तत्कालीन गृहसचिव आरएन बनर्जी ने अपनी पुस्तक दी सिविल सर्वेंट इन इंडिया में इस सबका उल्लेख किया है। यदि बंबई पुलिस ने इसका संज्ञान लिया होता तो गोडसे और आप्टे को आसानी से पकड़ा जा सकता था और गांधी की हत्या रोकी जा सकती थी।

अभियोजन पक्ष के प्रमुख गवाह डॉ. जगदीश चंद्र जैन की पुस्तक मैं बापू को न बचा सका में संकेत है कि उन्हें मदनलाल के षड्यंत्र का पता था जिसे उन्होंने बंबई सरकार को बता दिया था। राज्य के गृहमंत्री मोरारजी देसाई ने केंद्र सरकार को इस सबसे अवगत कराया। 20 जनवरी के हमले में मदनलाल की संलिप्तता के मद्देनजर केंद्र सरकार को इसे गंभीरता से लेना चाहिए था, लेकिन दिल्ली में गृह–सचिवालय को इसका भान भी न था।

दिल्ली पुलिस प्रधान ने उसे इसकी सूचना नहीं दी। वह पुलिस–प्रधान कुछ माह पूर्व ही नियुक्त हुआ था। जब गांधी की हत्या हुई उस समय सांप्रदायिकता और बिगड़ती शांति–व्यवस्था से घबरा कर नेहरू ने माउंटबेटन को सेना ओर पुलिस की कमान सौंप रखी थी। पुलिस–गुप्तचरी भी अंग्रेजों के पास थी। तो क्या अंग्रेजों को गांधी से भय था कि कहीं वे अपनी अहिंसात्मक शैली से भारत–पाक विभाजन को निरस्त न करा दें और उनके डिवाइड एंड रूल के फॉर्मूले को संकट में न डाल दें?

बिरला हाउस में 30 जनवरी 1948 गृहमंत्री सरदार पटेल की गांधी जी से मुलाकात हुई जो शाम पांच बजे के बाद भी 10 मिनट तक चली। इससे गांधी को प्रार्थना सभा में पहुंचने में विलंब हुआ। क्या थी वह मीटिंग?किस बात के लिए पटेल उन्हें मना रहे थे? गांधी कांग्रेस को राष्ट्रीय–आंदोलन मानते थे जिसमें सभी विचारधाराओं के लोग थे। वे कांग्रेस को राजनीतिक दल के रूप में नहीं देखना चाहते थे। उनका मानना था कि यदि कांग्रेस एक दल की भूमिका में रहेगी तो अन्य दल पनप नहीं पाएंगे जो लोकतंत्र के लिए अहितकारी होगा। उनकी इच्छा थी कि कांग्रेस को विघटित कर उसे 'लोक–सेवक–संघ' में परिवर्तित कर दिया जाये और नेहरू एवं पटेल के नेतृत्व में एक नई पार्टी बने, लेकिन कांग्रेस नेतृत्व को लगता था कि इससे अराजकता फैल जाएगी और शासन चलाना मुश्किल हो जाएगा। नेहरू–पटेल जानते थे कि गांधी अंततः अपनी बात मनवा लेंगे। कहा जाता है कि गांधी जी 30 जनवरी 1948 की प्रार्थना सभा के बाद कांग्रेस के विघटन की घोषणा करने वाले थे। क्या वाकई ऐसा था?

ऐसे ही कुछ और सवाल हैं– गांधी का पोस्टमॉर्टम नहीं हुआ और किसी को पता नहीं कि उन्हें कितनी गोली लगीं?विभिन्न अखबारों ने दो से लेकर चार गोली लगने का समाचार छापा। यदि गांधी को चार गोली लगीं तो कोई दूसरा कातिल भी था। वह कौन था?गोली किस हथियार से चली? कोर्ट

शेष पृष्ठ 10 पर.....

बिरला हाउस में ३० जनवरी १९४८ गृहमंत्री सरदार पटेल की गांधी जी से मुलाकात हुई जो शाम पांच बजे के बाद भी १० मिनट तक चली। इससे गांधी को प्रार्थना सभा में पहुंचने में विलंब हुआ। क्या थी वह मीटिंग? किस बात के लिए पटेल उन्हें मना रहे थे?

गांधी जी की हत्या किसने की थी?

शंकर शरण

राहुल गांधी द्वारा 'आरएसएस के लोगों ने गांधीजी की हत्या की' वाले भाषण पर सुप्रीम कोर्ट में मामला खिंचता लग रहा है। इस में रोचक राजनीतिक कोण भी है, जिस के अनपेक्षित परिणाम भी संभव हैं। पहली ष्टि में कोर्ट ने राहुल को दोषी पाया, जिस पर राहुल पीछे हटते नहीं दिख रहे, इसलिए गांधीजी की हत्या पर एक बार फिर विस्तृत चर्चा अनायास शुरु हो गई है। इस में प्रमुख राजनीतिक दलों के हित–अहित जुड़े होने के कारण अनेक बुद्धिजीवी और पत्रकार भी सक्रिय हो गए हैं।

हालांकि, 19 जुलाई को सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी या उस की छपी रिपोर्ट में एक बड़ी भूल दिखाई देती है। रिपोर्ट अनुसार, कोर्ट की टिप्पणी यह थी, ''पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट के फैसले में केवल यह कहा गया कि नाथूराम गोडसे आरएसएस का कार्यकर्ता था।'' इस वाक्य से लगता है कि गांधीजी की हत्या करते समय भी गोडसे आरएसएस कार्यकर्ता था। यह गलत है, जिस से अनुचित अर्थ प्रसारित हुआ है।

गांधीजी की हत्या पर चले मुकदमे में स्वयं गोडसे द्वारा दिया गया बयान इस प्रकार है, ''(पैराग्राफ 29) मैंने अनेक वर्षों तक आरएसएस के लिए काम किया और बाद में हिन्दू महासभा में चला गया और इस के अखिल–हिन्दू झंडे के अंतर्गत एक सिपाही बन गया।'' आगे पैराग्राफ 114 में गोडसे ने फिर स्पष्ट किया कि वह हिन्दुओं के उचित अधिकारों के लिए देश की राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेना चाहता था, **''इसलिए मैं ने संघ का त्याग कर दिया और हिन्दू महासभा से जुड़ गया।''**

गोडसे के इस बयान को कोर्ट में किसी ने चुनौती नहीं दी थी। अर्थात् उसका बयान सत्य था। वैसे भी, हत्याकांड के समय और उस से पिछले वर्षों में गोडसे का संबंध वीर सावरकर (हिन्दू महासभा के नेता) से था, जो आरएसएस के प्रति हिकारत का भाव रखते थे।

इस प्रकार, यदि कोर्ट की टिप्पणी से यह संदेश गया कि गोडसे आरएसएस कार्यकर्ता था, मगर आरएसएस को सामूहिक रूप से हत्या के लिए बदनाम करना अनुचित है, जिस के लिए राहुल गांधी को माफी मांग लेनी चाहिए थी, और चूंकि वे इस के लिए तैयार नहीं, अतः मुकदमा चलेगा – तो इस में एक बुनियादी गलती है। जिसे अवश्य सुधारा जाना चाहिए। क्योंकि अनेक हिन्दू–विरोधी प्रचारक इस के दुरुपयोग में लग चुके हैं, कि किसी संगठन सदस्य द्वारा किए गए काम की जिम्मेवारी संगठन पर सामूहिक रूप से आएगी ही!

किन्तु किसी संगठन का भूतपूर्व और वर्तमान सदस्य होने में गुणात्मक फर्क है। जिस प्रकार, आज माननीय केंद्रीय मंत्री एम. जे. अकबर या सुरेश प्रभु यदि कोई कार्य करें, तो उस का दोष या श्रेय भाजपा को जाएगा, न कि कांग्रेस या शिव सेना को, जिस में ये पहले थे। उसी प्रकार, आरएसएस के पूर्व–सदस्य द्वारा किए गए कार्य से इस संगठन को जोड़ना एक गलती है।

पिछले पैंसठ साल से यह दुष्प्रचार राजनीतिक कारणों से होता रहा है। खुद राहुल गांधी का भाषण ठीक वही चीज थी। बल्कि, कोर्ट की सलाह के बावजूद उन का अड़ना भी साबित करता है कि वे इसे सामान्य नहीं, वरन राजनीतिक बयान मानते हैं, जिस से पीछे हटने में उन्हें परेशानी है। यदि सामान्य भूल रही होती, तो 'सॉरी' कहकर मामला खत्म करना आसान था।

इसलिए अब मामला दिलचस्प हो सकता है। गांधी–हत्या इस देश में आरएसएस–विरोधी राजनीति, जो मूलतः हिन्दू–विरोधी राजनीति की आड़ भर है, का एक बड़ा प्रचार मुद्दा रहा है। इसलिए, सभी राजनीतिक प्रचारक जानते हैं कि जब 'भूतपूर्व' विशेषण जोड़ कर बोला जाएगा, तो किसी संगठन का सदस्य बताने का वही अर्थ नहीं रहेगा, जो इसे छिपाने से जाता है।

कारण जो भी हो, मामले के विस्तार में जाने से ऐसे पहलू भी सामने आ सकते हैं, जिन्हें जान–बूझ कर दबाया गया है। इस में सब से बड़ी बात हैः हत्या का कारण–मोटिव –की। गांधीजी की हत्या का उल्लेख इस भोलेपन, या दुष्टता, से होता है मानो हत्या करने वाला पागल जुनूनी था। यह सच नहीं है। स्वयं हत्या के मुकदमे की सुनवाई करने वाले न्यायाधीश जी. डी. खोसला ने बिलकुल उलटा लिख छोड़ा है। वैसे भी, हत्या का कोई मुकदमा कभी भी मोटिव को दरकिनार कर नहीं तय होता। **गांधीजी की हत्या की चर्चा में इस बिन्दु को जतन–पूर्वक क्यों छिपाया गया है?**

इस प्रश्न की गंभीरता को समझने की जरूरत है। उदाहरणार्थ, डॉ. राम मनोहर लोहिया के विचार देखें। उन्होंने लिखा, ''देश का विभाजन और गाँधीजी की हत्या एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। एक पहलू की जांच किए बिना दूसरे की जांच करना समय की मूर्खतापूर्ण बर्बादी है।'' यह कठोर कथन क्या दर्शाता है?

यही, कि वैसा न करके नाथूराम गोडसे को मात्र 'जुनूनी हत्यारा' या 'हिन्दू सांप्रदायिक' घोषित करने में मूर्खता की गई है। बल्कि राजनीतिक चतुराई! दुर्भाग्यवश, हमारे बौद्धिक परिश्य पर छाई रही है। जिस किसी को 'गांधी के हत्यारे' कहकर निंदित किया जाता है, जबकि विभाजन की विभीषिका से उस के संबंध की कभी जांच नहीं होती। क्योंकि जैसे ही यह जांच होगी, जिसे लोहिया ने जरूरी माना था, वैसे ही गोडसे का रूप भी बदल जाएगा। **उस हत्या को गलत मानते हुए भी,**

शेष पृष्ठ 10 पर.....

न्यूजीलैंड में छः साल की भारतीय बेटी कुल्हाड़ी थामे डाकुओं से भिड़ी

मेलबोर्न, (एजेंसी), 08 सितंबर 2016। छः साल की बेटी से कोई बहादुरी की क्या अपेक्षा कर सकता है, लेकिन भारत की इस बहादुर बेटी ने न्यूजीलैंड में उसके पिता की दुकान में कुल्हाड़ी और लोहे की रॉड लेकर घुसे छः हथियारबंद डाकुओं से बाकायदा मुकाबला किया और उन्हें वहां से भागने पर मजबूर किया।

सराह पटेल नाम की इस बेटी की बहादुरी वहां लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हुई। विदेशी अखबारों में इस बहादुर भारतीय बेटी के हौसले व तारीफ के पुल बांधे जा रहे हैं। दरअसल सीसीटीवी फुटेज में यह पूरा वाकया बड़े ही नाटकीय अंदाज में दिखाई दिया।

सबसे पहले मुंह पर मास्क लगाए ये डाकू पटेल की इलेक्ट्रिक दुकान में घुसते हैं और हाथापाई करते हुए कर्मचारियों की पिटाई शुरु कर देते हैं। ये डाकू कुल्हाड़ी व लोहे की रॉड से दुकान के कैबिनेट तोड़कर वहां रखे हजारों डॉलर लूट लेते हैं। तभी एक कर्मचारी द्वारा विरोध करने पर एक डाकू उसे गिराकर उसके ऊपर कुल्हाड़ी लेकर खड़ा हो जाता है, ताकि कर्मचारी उस पर हमला न कर सके। इस बीच छः साल की सराह पटेल डाकू की टांग

पकड़कर उसे बुरी तरह जकड़ लेती है।

इस नाटकीय घटनाक्रम में डाकुओं को भागने में देरी होती है। बाद में पुलिस ने वेस्ट ऑकलैंड में पीछा करते हुए सोलह साल के पांच किशोरों को डकैती के आरोप में पकड़ लिया है, जबकि छठे की तलाश जारी है।

वीडियो में यह भी दिखाया गया है कि डाकू को छोड़ने के बाद यह बहादुर बेटी अपने दादा की मदद को भागती है।

दुनिया के कई अखबारों ने सराह पटेल की इस 'चौंका देने वाली बहादुरी' को ''निडर बेटी'' बताते हुए प्रकाशित किया है।

http://googleweblight.com/

ब्रिटेन के कट्टरपंथी इस्लामिक उपदेशक को साढ़े पांच साल की जेल

लंदन, 6 सितंबर। आतंकी संगठन आईएसआईएस के समर्थन को बढ़ावा देने के चलते पाकिस्तानी मूल के एक कट्टर इस्लामी उपदेशक अंजेम चौधरी को ब्रिटेन की एक अदालत ने साढ़े पांच साल की कैद की सजा सुनाई।

चौधरी (49) को लंदन के ओल्ड बेली कोर्ट में जुलाई में दोषी ठहराया गया था और एक न्यायाधीश ने आज फैसला सुनाया कि वह एक खतरनाक आदमी है जिसे जेल में रखा जाना चाहिए। इस उपदेशक ने ऑनलाइन प्रकाशित एक निष्ठा पत्र में आईएसआईएस का समर्थन किया था।

अंजेम चौधरी को 33 वर्षीय सहयोगी मोहम्मद रहमान के साथ कैद की सजा सुनाई गई है। उसे भी साढ़े पांच साल की कैद की सजा भी सुनाई गई। चौधरी के समर्थकों ने अदालत कक्ष के दर्शक दीर्घा से अल्लाहू अकबर के नारे लगाए। इन सबके बीच न्यायाधीश ने सजा सुनाई। (भाषा)

http://googleweblight.com

संयुक्त राष्ट्र चार्टर का संस्कृत में अनुवाद

संयुक्त राष्ट्र, 7 सितम्बर 2016। संयुक्त राष्ट्र के चार्टर का संस्कृत में अनुवाद किया गया है। यह चार्टर संयुक्त राष्ट्र की बुनियादी संधि है। संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि सैयद अकबरुद्दीन ने मंगलवार को कहा कि चार्टर अब संस्कृत में उपलब्ध है। इस उत्कृष्ट प्रयास के लिए डॉ. जितेंद्र कुमार त्रिपाठी आपका शुक्रिया। उन्होंने ट्विटर पर चार्टर के संस्कृत कवर की एक तस्वीर भी डाली। त्रिपाठी लखनऊ स्थित अखिल भारतीय संस्कृत परिषद के सचिव हैं।

ध्यान रहे, संयुक्त राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय संगठन सम्मेलन के खत्म होने के साथ अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को में 26 जून 1945 को संयुक्त राष्ट्र चार्टर पर हस्ताक्षर किया गया था और यह 24 अक्टूबर 1945 से प्रभाव में आया। चार्टर संयुक्त राष्ट्र की सभी 6 आधिकारिक भाषाओं में उपलब्ध है। (भाषा)

webdunia.com

भारत विखंडन : द्रविड़ और दलित मामलों में पश्चिम का हस्तक्षेप

राजीव मल्होत्रा

यह किताब पिछले दशक के मेरे उन तमाम अनुभवों का नतीजा है जिन्होंने मेरी शोध और बौद्धिकता को प्रभावित किया है। ६० के दशक की बात है, प्रिंसटन विश्वविद्यालय के एक अफ्रीकन–अमरीकन विद्वान ने बातों बातों में जिक्र किया कि वे भारत के दौरे से लौटे हैं जहाँ वे एफ्रो–दलित प्रोजेक्ट पर काम करने गए थे। तब मुझे मालूम चला कि यह अमरीका द्वारा संचालित तथा वित्तीय सहायता–प्रदान प्रोजेक्ट भारत में अंतर्जातीय–वर्ण सम्बन्धों तथा दलित आंदोलन को अमरीकन नजरिए से देखने का प्रकल्प है।

एफ्रो–दलित पोजेक्ट दलितों को काला तथा गैर –दलितों को गोरा जताता है। अमरीका के जातिवाद, दासत्व परंपरा तथा काला–गोरा सम्बन्धों के इतिहास को यह प्रकल्प सीधे–सीधे भारतीय समाज पर अक्स कर देने की योजना है। हालांकि भारत में नए जाति समीकरणों और उनके आपसी द्वन्दों ने मुद्दतों से दलितों के खिलाफ एक अलग मनोभाव पैदा कर दिया है लेकिन इसके बावजूद इसका अमरीका के दासत्व– इतिहास के साथ दूर दूर तक मुकाबला नहीं किया जा सकता। अमरीकन इतिहास से प्रेरित इस एफ्रो–दलित प्रोजेक्ट की कोशिश दलितों को दूसरी जातियों द्वारा सताए गए–ऐसा जता कर उनको एक अलग पहचान और तथाकथित सक्षमता प्रदान करना है।

अपनी तौर पर मैं आर्य लोगों के बारे में भी अध्ययन कर रहा था– ये जानने के लिए कि वे कौन थे और क्या संस्त भाषा और वेद को कोई बाहरी आक्रान्ता ले कर आए थे या ये सब हमारी ही ईजाद और धरोहर हैं इत्यादि। इस सन्दर्भ में मैंने कई पुरातात्विक, भाषाई तथा इतिहास प्रेरित सम्मेलन और पुस्तक प्रोजेक्ट्स भी आयोजित किये ताकि इस मामले की पडताल में गहराई से जाया जा सके।

इसके चलते मैं ने अंग्रेजों की उस खोज की ओर भी ध्यान दिया जिसके हिसाब से उन्होंने द्रविड़–पहचान को ईजाद किया था–जो असल में १६ वीं शताब्दी के पहले कभी थी ही नहीं और केवल आर्यन थ्योरी को मजबूत जताने के लिए किसी तरह रच दी गयी थी। इस द्रविड़–पहचान के सिद्धांत को प्रासंगिक रहने के लिए "विदेशी आर्य" के सिद्धांत का होना और उन विदेशियों के कुत्यों को सही मानना आवश्यक था।

उस दौरान मेरी नजर बराबर भारत को दी जा रही चर्च की वित्तीय सहायता पर भी थी। 'बेचारे बच्चों को खाना कपड़ा दे कर, पढ़ाई के अवसर दे कर बचाइए" (सेव) जैसे विज्ञापन–अभियान काफी जोर–शोर से प्रचारित किये जा रहे थे और ये वित्तीय सहयता भी उसी दिशा में मांगी जा रही थी। सच पूछिए तो मैं भी जब बीस–पच्चीस का था और अमरीका में रह रहा था तब मैं ने भी दक्षिण भारत में इन अभियानों से प्रेरित हो कर एक बच्चे को प्रायोजित किया था। लेकिन अपनी भारत यात्राओं के दौरान मुझे अक्सर ऐसा लगा कि जो धन इकठ्ठा किया जा रहा है, वह जो मुद्दा बताया जा रहा है उसमें कम और लोगों के धर्मान्तरण और उनका मन बदलने में ज़्यादा इस्तेमाल किया जा रहा है।

इसके अलावा मैंने अमरीका के प्रबुद्ध मंडलों, स्वतंत्र विद्वानों, मानवाधिकार संगठनों तथा बुद्धिजीवियों के साथ भी उनके हिसाब से भारत के अभिषप्त होने और इसे उनके सभ्य (सिविलाइजेड) करने के प्रयासों के मुद्दे पर भी तमाम बहसों मैंने हिस्सा लिया। **कास्ट (जाति) काउ (गौ) और करी (शोरबे दार व्यंजन) मेरा ही गढा हुआ मुहावरा है जिसका उद्देश्य था कि उन लोगों की कोशिशों को उजागर किया जाये जो भारत की सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का विचित्र और सनसनीखेज चित्रण करते हैं और इन समस्याओं को "मानवाधिकार" के मुद्दे के तौर पर उठाते हैं।**

मैंने तय किया कि इस तरह के तमाम सिद्धांतों के रचने और प्रचारित करने वाले प्रमुख संगठनों पर नजर रखी जाये और उन संगठनों की भी ट्रैकिंग की जाये जो मानवाधिकार–उल्लंघनों के नाम पर राजनीतिक दबाव बना रहे हैं और अन्ततोगत्वा भारत को दोषी करार देने का कार्य कर रहे हैं।

मैंने इस प्रकार की वित्तीय सहायता और इसकी पूरी चेन (कड़ी) की पडताल की। उनके तमाम संस्थानों को बांटी गयी विज्ञापन सामग्रियों का

मुझे पता चला कि एक बड़े वर्ग के लिए भारतवर्ष एक मुख्य लक्ष्य है। यह एक ऐसा नेटवर्क (जाल) है जिसमे संस्थानों, व्यक्तियों और चर्चों का समावेश है और जिसका उद्देश्य भारत के कमजोर तबके पर अलहदा पहचान, अलहदा–इतिहास और एक अलहदा–धर्म थोपना है।

अध्ययन किया,इनके तमाम सम्मेलनों को कार्यशालाओं को और प्रचार प्रकाशनों को भी देखा–समझा। मैंने इस सब के पीछे जो लोग हैं उनके बारे में और उनके सम्बन्ध कैसे और किन संस्थानों से हैं, इसकी भी पडताल की। **जो मुझे पता चला वह हर उस भारतीय को–जो भी देश की अखंडता के लिए समर्पित है–चौंका देने वाला था।**

मुझे पता चला कि एक बड़े वर्ग के लिए भारतवर्ष एक मुख्य लक्ष्य है। यह एक ऐसा नेटवर्क (जाल) है जिसमे संस्थानों, व्यक्तियों और चर्चों का समावेश है और जिसका उद्देश्य भारत के कमजोर तबके पर अलहदा पहचान, अलहदा–इतिहास और एक अलहदा–धर्म थोपना है।

इस प्रकार की संस्थाओं के गठजोड़ में केवल चर्च समूह ही नहीं,सरकारी संस्थाएं तथा संबंधित संगठन,व्यक्तिगत प्रबुद्ध मंडल और बुद्धिजीवी तक शामिल हैं। सतही तौर पर वे सब एक दूसरे से अलग और स्वतंत्र दिखते हैं लेकिन मैंने पाया है कि असल में उनका तालमेल आपस में बहुत गहरा है और उनकी गतिविधियाँ अमरीका तथा यूरोप से नियंत्रित की जाती हैं और वहीँ से उनको काफी वित्तीय सहायता भी प्राप्त होती है ।

इनके इस गहरे गठजोड़ और ताल–मेल ने मुझे काफी हद तक प्रभावित भी किया। उनके सिद्धांत, दस्तावेज, संकल्प और रणनीतियां बहुत सुलझी हुयी हैं और दलितों/पिछड़ों की मदद करने की आड़ में इनका उद्देश्य भारत की एकता और अखंडता को तोड़ना है।

इन पश्चिमी संस्थानों में कुछ बड़े ओहदों पर इन दलित/पिछड़ी जाति (जिन्हें तथाकथित रूप से एमपावर (empower) किया जा रहा है) के कुछ भारतीयों को स्थान दिया गया है – मगर इसका पूरा ताना बाना पश्चिमी लोगों द्वारा ही सोचा समझा व नियोजित और फण्ड किया गया था। हालांकि अब और बहुत से भारतीय लोग और NGOs इन ताकतों के सहभागी बनाए गए हैं और इन लोगों को पश्चिम से वित्तीय सहायता और निर्देश मिलते रहते हैं ।

अमरीका तथा यूरोपीय विश्वविद्यालयों में दक्षिण एशियाई अध्ययन में इस तरह के कार्यकर्ताओं (ऐक्टिविस्ट्स, activists) को नियमित तौर पर आमंत्रित किया जाता है और उन्हें वहां प्रमुखता दी जाती है। ये वे ही संस्थान हैं जो खालिस्तानियों, कश्मीरी उग्रवादियों, माओवादियों तथा इस प्रकार के विध्वंसक तत्वों को आमंत्रित कर वैचारिक मदद तथा प्रोत्साहन देते रहे हैं।

तब मेरी समझ में आया कि भारत में अलगाववादी ताकतों के निर्माण में इतना कुछ खर्च सिर्फ इसलिए किया जा रहा है ताकि यह अलगाववादी विचार अंततोगत्वा एक बेरोकटोक आतंकवाद में बदल जाए जिससे भारत का राजनीतिक विघटन संभव हो सके !

इसके चलते मुझे यह संदेह हुआ कि ये भारत के दलितों/द्रविड़ों तथा अल्पसंख्यकों की सहायता वाली बात कहीं कुछ पश्चिमी देशों की विदेश नीति का हिस्सा तो नहीं है प्रत्यक्ष रूप से न सही पर परोक्ष रूप में सही ! मुझे भारत के अलावा एक भी ऐसे देश की जानकारी नहीं है जहाँ (भारत की तरह) स्थानीय नियंत्रण/जांच के बिना इतने बड़े स्तर पर गतिविधियाँ बाहर से संचालित की जा रही हों।

तब मेरी समझ में आया कि भारत में अलगाववादी ताकतों के निर्माण में इतना कुछ खर्च सिर्फ इसलिए किया जा रहा है ताकि यह अलगाववादी विचार अंततोगत्वा एक बेरोकटोक आतंकवाद में बदल जाए जिससे भारत का राजनीतिक विघटन संभव हो सके !

शैक्षणिक –जोड तोड और उससे सम्बंधित/जनित आतंकवाद श्रीलंका में साफ तौर पर सबने देखी ही है – जहाँ कि त्रिम अलगाववादिता ने कितने भयावह गृहयुद्ध की शक्ल ले ली । ऐसा ही अफ्रीका में भी हुआ जहाँ विदेशी–नियोजित पहचान संघर्ष (identitycrisis आइडेंटिटी क्राइसिस) ने कितना खतरनाक जातीय धार्मिक नरसंहार का रूप ले लिया ।

तीन साल पहले ही इस लगातार मेहनत के फलस्वरूप मेरी शोध सामग्री अच्छी खासी बन चुकी थी। अधिकतर भारतीयों को यह पता ही नहीं है कि विनाशकारी ताकतें देश तोडने में लगी हैं, और मुझे लगा कि इस शोध सामग्री को सुव्यवस्थित करना चाहिए और विस्तृत रूप से लोगों को समझाना चाहिए और इस पर वाद–विवाद के अवसर होने चाहिए। मैंने तमिलनाडु स्थित अरविंदन नीलकंठन के साथ मिल कर काम करना शुरु किया– जिसमें मेरे विदेशी शोध–आंकड़े तथा भारत में हो रही सही गतिविधियों के ताल–मेल से काम किया जा सके।

यह किताब द्रविड़– आंदोलन तथा दलित पहचान की ऐतिहासिकता पर नजर डालती है और साथ ही साथ उन ताकतों को भी संज्ञान में लेती है जो देश में इन अलगाववादी पहचानों को बढ़ावा देने में कार्यरत हैं। इस किताब में ऐसे लोगों,संस्थाओं और उनके इस दिशा में कार्यरत होने के कारणों, क्रियाकलापों और उनके मूल ध्येय का भी समावेश है। ऐसी शक्तियां ज्यादातर अमरीका और यूरोपीय देशों में हैं लेकिन इनकी संख्या भारत में भी बढ़ने लगी है – भारत में इनके संस्थान इन विदेशी शक्तियों के स्थानीय कार्यालय की तरह काम करते हैं।

इस किताब का उद्देश्य सनसनी फैलाना या किसी प्रकार की भविष्यवाणी करना नहीं है। इस किताब का उद्देश्य भारत और उसके भविष्य के बारे में सार्थक बहस की शुरुआत करना है। भारत के आर्थिक रूप से सक्षम होने और अंतरराष्ट्रीय तौर पर उसके रुतबे के बारे में तो बहुत कुछ लिखा जा चुका है लेकिन उन अंदेशों के बारे में–जो कि इस सफर के दौरान हो सकते हैं –बहुत कम लिखा गया है, खास तौर पर जब भारत विखंडन की कई योजनायें (जिनका पर्दाफाश इस पुस्तक में किया गया है) तेजी से आगे बढाई जा रही हैं। मेरी उम्मीद है कि इस अंतर को यह किताब कुछ हद तक कम करेगी।

Join Rajiv Malhotra for his FB LIVE Broadcasts Follow Rajiv on facebook.com/RajivMalhotra.Official: "Aditya Agrawal"

adiagr@gmail.com

पृष्ठ 06 का शेषांश....

उदाहरणार्थ, डॉ. राम मनोहर लोहिया के विचार देखें। उन्होंने लिखा, ''देश का विभाजन और गाँधीजी की हत्या एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। एक पहलू की जांच किए बिना दूसरे की जांच करना समय की मूर्खतापूर्ण बर्बादी है।'' यह कठोर कथन क्या दर्शाता है?

उसे जुनूनी हत्यारा नहीं, बल्कि क्षुब्ध 'भ्रमित देशभक्त' कहना होगा। यानी, जो स्वयं गांधीजी चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह और ऊधम सिंह जैसों को कहा करते थे।

इस समझ से गांधीवादी उसी तरह मतभेद रख सकते हैं, जैसे अंग्रेज लोग भगत सिंह और ऊधम सिंह पर रखते हैं। आखिर अंग्रेज तो भगत सिंह या ऊधम सिंह को अपना पूज्य नहीं मानते। लेकिन ये दोनों भारतवासियों के लिए गौरव हैं। उसी तरह, नाथूराम गोडसे के प्रति सहज या सम्मान भाव तक रखना स्वभाविक होगा, यदि लोहिया की बातों पर विचार किया जाए। **तब गोडसे के प्रति भाव भी सही धरातल पर आएगा, आना चाहिए।** गोडसे में कोई पागलपन नहीं, बल्कि देशभक्ति, राष्ट्रीय आत्मसम्मान और न्याय भावना थी, जो अदालत में दिए गए उस के शान्त, विस्तृत बयान से स्पष्ट होता है।

स्वयं लोहिया ने गांधीजी को विभाजन और उस से लाखों लोगों की मौत का सीधा जिम्मेवार माना है। ध्यान रहे, लोहिया गांधी के निकट सहयोगी थे। वे लिखते हैं कि विभाजन होने पर लाखों मरेंगे, यह गांधीजी जानते थे, फिर भी उन्होंने उसे नहीं रोका। बल्कि नेहरू की मदद में कांग्रेस कार्यसमिति को विभाजन स्वीकारने के लिए खुद तैयार किया–इसे लोहिया ने गाँधी का 'अक्षम्य' अपराध माना है। तब इस अपराध का क्या दंड होता?

सब से अच्छा दंड उन्हें अपनी सहज मृत्यु तक जीवित रहने देना था। लेकिन यदि गोडसे ने ऐसा नहीं होने दिया, तो उस का कार्य भगत सिंह वाली श्रेणी में है, जिस में लाला लाजपत राय की मौत का बदला लिया गया था। किसी ने यदि लाखों हजारों निरीह भारतीयों की मौत का, उन के प्रति विश्वासघात का, बदला लिया तो इसे सही रूप में तो रखा ही जाना चाहिए! अन्यथा, ऊपर डॉ. लोहिया और क्या कह रहे हैं?

लोहिया के इन शब्दों पर गंभीरता से विचार करें। विभाजन से ''दंगे होंगे, ऐसा तो उन्होंने (गांधीजी ने) समझ लिया था, लेकिन जिस जबर्दस्त पैमाने पर दंगे वास्तव में हुए, उस का उन्हें अनुमान था, इस में मुझे शक है। अगर ऐसा था, तब तो उन का दोष अक्षम्य हो जाता है। दरअसल उन का दोष अभी भी अक्षम्य है। अगर बँटवारे के फलस्वरूप हुए हत्याकांड के विशाल पैमाने का अन्दाज उन्हें सचमुच था, तब तो उन के आचरण के लिए कुछ अन्य शब्दों का इस्तेमाल करना पड़ेगा।''

यह लोहिया ने सन् 1967 में लिखा था, यानी किसी क्षणिक आवेग में नहीं। बीस वर्ष बाद, सोच–समझ कर, ठंढे दिमाग से। गांधी के प्रति सम्मान का ध्यान रखते हुए उन्होंने उन कटु शब्दों का उल्लेख नहीं किया, जो उन के मन में आए होंगे। किंतु वह शब्द छल, अज्ञान, हिन्दुओं–सिखों के प्रति विश्वासघात, बौद्धिक दिवालियापन, जैसे ही हो सकते हैं। इसलिए, जिस भावना के वशीभूत होकर गोडसे ने गांधीजी को दंडित किया, वह निस्संदेह उसी श्रेणी में है जिस में भगत सिंह और ऊधम सिंह रखे गये हैं। जिन्हें संदेह हो, वे गोडसे का वक्तव्य एक बार पढ़ लें।

गांधीजी की हत्या के लांछन से आरएसएस को तो मुक्त किया ही जाना चाहिए। किन्तु हमारे राजनीतिक–बौद्धिक वर्ग ने गोडसे के साथ भी न्याय नहीं किया है। यह भी सामने आना चाहिए।(2 अगस्त)

लेखक सुप्रसिद्ध स्तम्भकार हैं। ये उनके निजी विचार हैं।

पृष्ठ 05 का शेषांश.....

में इटली की बरीटा 0.9 एमएम पिस्टल और तीन रिवाल्वर जमा हुईं। यदि कातिल एक तो असलहे अनेक कैसे? गांधी के शरीर के घाव किसी भी जमा असलहे से नहीं मिले। क्या कोई ऐसा भी अज्ञात कातिल था जिसका असलहा बरामद ही नहीं हुआ?

एक अनजान व्यक्ति ने पुलिस को बयान दिया कि गांधी को तीन गोली लगीं। उसके बयान को उसी से तस्दीक करा कर पुलिस ने उसे ही एफआइआर मान लिया। एफआइआर उर्दू और फारसी में दर्ज हुई। 1999 में किरण बेदी ने उसका अनुवाद कराया। पंचनामे का आज तक पता नहीं। क्या बिना उच्चतम राजनीतिक हस्तक्षेप के ऐसा हो सकता है? राहुल ऐसे कई सवालों से न्यायालय में दो–चार हो सकते हैं। राहुल गांधी की राजनीति में उत्साह ज्यादा और गहराई कम है। उन्हें अपने शब्दों के प्रयोग पर सतर्क रहने की जरूरत है, अन्यथा राजनीतिक लाभ के लिए अनावश्यक विवाद खड़ा करने से उनका अपना, कांग्रेस पार्टी और देश का नुकसान हो सकता है। (8 सित.)

लेखक सेंटर फॉर द स्टडी एंड पॉलिटिक्स के निदेशक हैं।

सुभाषित

शिष्टाचारश्च शिष्टश्च धर्मो धर्मभृतां वर।
सेवितव्यो नरव्याघ्र प्रेत्येह च सुखेप्सुना।।

महाभारत में कहा गया कि– जो व्यक्ति इस लोक और परलोक दोनों में सुख चाहता है उसको चाहिए कि वह श्रेष्ठ पुरुषों के द्वारा बताए हुए धर्म का पालन करें तथा उनके द्वारा अपनाए गए आचरण का पालन करे एवं उनके बताए हुए व्यवहार को अपनाते हुए जीवन व्यतीत करें।

क्या मदर टेरेसा संत थीं?

डॉ. विवेक आर्य

मदर टेरेसा! यह नाम सुनते ही किसी के भी मस्तिष्क में एक नीले बॉर्डर वाली, सर तक ढकी हुई, सफेद साड़ी पहनी हुई, वृद्ध महिला का झुरियों भरा चेहरा उभरता है, जिसने मानवता की सच्ची सेवा के लिए अपना मूल देश त्याग दिया। जो गरीबों की हमदर्द बनकर उभरी और जिसने हजारों अनाथों, दीनों और निराश्रयों को सहारा दिया। जिसे उसकी सेवा के लिए विश्व शांति का नोबल पुरस्कार मिला था।

मदर टेरेसा के विषय आपको यह सब मालूम है क्यूंकि आपको यही बताया गया हैं। परन्तु इस सिक्के के दूसरे पहलू से आप अभी अनभिज्ञ हैं। उसी से अवगत करवाना इस लेख का मुख्य उद्देश्य है।

सत्य अगर कड़वा भी हो तो भी वह सत्य ही कहलाता है। भारत में कार्य करने वाली ईसाई संस्थाओं का एक चेहरा अगर सेवा है तो दूसरा असली चेहरा प्रलोभन, लोभ, लालच, भय और दबाव से धर्मान्तरण भी करना है। इससे तो यही प्रतीत होता है कि जो भी सेवा कार्य मिशनरी द्वारा किया जा रहा है, उसका मूल उद्देश्य ईसा मसीह के लिए भेड़ों की संख्या बढ़ाना है। संत वही होता है जो पक्षपात रहित एवं जिसका उद्देश्य मानवता की भलाई है। ईसाई मिशनरियों का पक्षपात इसी से समझ में आता है की वह केवल उन्हीं गरीबों की सेवा करना चाहती है, जो ईसाई मत को ग्रहण कर ले।

मदर टेरेसा का जन्म 26 अगस्त 1910 को स्कोप्जे, मेसेडोनिया में हुआ था और बारह वर्ष की आयु में उन्हें अहसास हुआ कि "उन्हें ईश्वर बुला रहा है"। 24 मई 1931 को वे कलकत्ता आई और यहीं की होकर रह गईं। कोलकाता आने पर धन की उगाही करने के लिए मदर टेरेसा ने अपनी मार्केटिंग आरम्भ की। उन्होंने कोलकाता को गरीबों का शहर के रूप में चर्चित कर और खुद को उनकी सेवा करने वाली के रूप में चर्चित कर अंतराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त करी। वे कुछ ही वर्षों में दया की मूर्ति, मानवता की सेविका, बेसहारा और गरीबों की मसीहा, "लार्जर दैन लाईफ" वाली छवि से प्रसिद्ध हो गईं।

उदाहरण के लिए अमेरिका के एक बड़े प्रकाशक राबर्ट मैक्सवैल, जिन्होंने कर्मचारियों की भविष्यनिधि फण्ड्स में 450 मिलियन पाउंड का घोटाला किया। उसने मदर टेरेसा को 1.25 मिलियन डालर का चन्दा दिया। मदर टेरेसा मैक्सवैल की पृष्ठभूमि को जानती थी।

हालाँकि उन पर हमेशा वेटिकन की मदद और मिशनरीज ऑफ चौरिटी की मदद से "धर्म परिवर्तन" का आरोप तो लगता रहा । गौरतलब तथ्य यह है कि इनमें से अधिकतर आरोप पश्चिम की प्रेस या ईसाई पत्रकारों आदि ने ही किये थे ना कि किसी हिन्दू संगठन ने, जिससे संदेह और भी गहरा हो जाता है। अपने देश के गरीब ईसाइयों की सेवा करने के स्थान पर मदर टेरेसा को भारत के गरीब गैर ईसाइयों के उत्थान में अधिक रूचि होना क्या इशारा करता है? पाठक स्वयं निर्णय कर सकते है।

मदर टेरेसा को समूचे विश्व से, कई ज्ञात और अज्ञात स्रोतों से बड़ी–बड़ी धनराशियाँ दान के तौर पर मिलती थीं। सबसे बड़ी बात यह थी कि मदर ने कभी इस विषय में सोचने का कष्ट नहीं किया कि उनके धनदाता की आय का स्रोत्र एवं प्रतिष्ठा कैसी थी। उदाहरण के लिए अमेरिका के एक बड़े प्रकाशक रॉबर्ट मैक्सवैल, जिन्होंने कर्मचारियों की भविष्यनिधि फण्ड्स में 450 मिलियन पाउंड का घोटाला किया। उसने मदर टेरेसा को 1.25 मिलियन डालर का चन्दा दिया। मदर टेरेसा मैक्सवैल की पृष्ठभूमि को जानती थी।

हैती के तानाशाह जीन क्लाऊड डुवालिये ने मदर टेरेसा को सम्मानित करने बुलाया। मदर टेरेसा कोलकाता से हैती सम्मान लेने गई। जिस व्यक्ति ने हैती का भविष्य बिगाड़ कर रख दिया। गरीबों पर जमकर अत्याचार किये और देश को लूटा। टेरेसा ने उसकी "गरीबों को प्यार करने वाला" कहकर तारीफों के पुल बांधे थे। **मदर टेरेसा को चार्ल्स कीटिंग से 1.25 मिलियन डालर का चन्दा मिला था।** ये कीटिंग महाशय वही हैं जिन्होंने "कीटिंग सेविंग्स एन्ड लोन्स" नामक

''तुम्हारा दर्द ठीक वैसा ही है जैसा ईसा मसीह को सूली पर हुआ था, शायद महान मसीह तुम्हें चूम रहे हैं। तब मरीज ने कहा कि प्रार्थना कीजिये कि जल्दी से ईसा मुझे चूमना बन्द करे''।

कम्पनी 1980 में बनाई थी और आम जनता और मध्यमवर्ग को लाखों डालर का चूना लगाने के बाद उसे जेल हुई थी। अदालत में सुनवाई के दौरान मदर टेरेसा ने जज से कीटिंग को माफ करने की अपील की थी। उस वक्त जज ने उनसे कहा कि जो पैसा कीटिंग ने गबन किया है क्या वे उसे जनता को लौटा सकती हैं?ताकि निम्न–मध्यमवर्ग के हजारों लोगों को कुछ राहत मिल सके, लेकिन तब वे चुप्पी साध गई।

यह दान किस स्तर तक था इसे जानने के लिए यह पढिए। मदर टेरेसा की मृत्यु के समय सुसान शील्ड्स को न्यूयॉर्क बैंक में पचास मिलियन डालर की रकम जमा मिली। सुसान शील्ड्स वही हैं जिन्होंने मदर टेरेसा के साथ सहायक के रूप में नौ साल तक काम किया। सुसान ही चौरिटी में आये हुए दान और चेकों का हिसाब–किताब रखती थी। जो लाखों रुपया गरीबों और दीन–हीनों की सेवा में लगाया जाना था। वह न्यूयॉर्क के बैंक में यूँ ही फालतू पड़ा था।

दान से मिलने वाले पैसे का प्रयोग सेवा कार्य में शायद ही होता होगा इसे कोलकाता में रहने वाले अरूप चटर्जी की अपनी पुस्तक द फाइनल वर्डिक्ट पढ़िए। लेखक लिखते हैं ब्रिटेन की प्रसिद्ध मेडिकल पत्रिका Lancet के सम्पादक डॉ.रॉबिन फॉक्स ने 1991 में एक बार मदर के कलकत्ता स्थित चैरिटी अस्पतालों का दौरा किया था। उन्होंने पाया कि बच्चों के लिये साधारण "अनल्जेसिक दवाईयाँ" तक वहाँ उपलब्ध नहीं थी और न ही "स्टर्लाइज्ड सिरिंज" का उपयोग हो रहा था। जब इस बारे में मदर से पूछा गया तो उन्होंने कहा कि "ये बच्चे सिर्फ मेरी प्रार्थना से ही ठीक हो जायेंगे।

मिशनरी में भर्ती हुए आश्रितों की हालत भी इतने धन मिलने के उपरांत भी उनकी स्थिति कोई बेहतर नहीं थी। मिशनरी की नन दूसरों के लिए दवा से अधिक प्रार्थना में विश्वास रखती थी। जबकि खुद कोलकाता के महंगे से महंगे अस्पताल में कराती थी। मिशनरी की एम्बुलेंस मरीजों से अधिक नन आदि को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने का कार्य करती थी। **यही कारण था कि मदर टेरेसा की मृत्यु के समय कोलकाता निवासी उनकी शवयात्रा में न के बराबर शामिल हुए थे।**

मदर टेरेसा अपने रूढ़िवादी विचारों के लिए सदा चर्चित रही। बांग्लादेश युद्ध के दौरान लगभग साढ़े चार लाख महिलायें बेघर हुई और भागकर कोलकाता आईं। उनमें से अधिकतर के साथ बलात्कार हुआ था जिसके कारण वे गर्भवती थीं। मदर टेरेसा ने उन महिलाओं के गर्भपात का विरोध किया और कहा था कि **"गर्भपात कैथोलिक परम्पराओं के विरुद्ध है और इन औरतों की प्रेग्नेन्सी एक "पवित्र आशीर्वाद" है।** मदर टेरेसा की इस कारण जमकर आलोचना हुई थी।

मदर टेरेसा ने इन्दिरा गाँधी की आपातकाल लगाने के लिये तारीफ की थी और कहा कि **"आपातकाल लगाने से लोग खुश हो गये हैं और बेरोजगारी की समस्या हल हो गई है"। गाँधी परिवार ने उन्हें इस बडाई के लिए "भारत रत्न" का सम्मान देकर उनका "ऋण" उतारा।** भोपाल गैस त्रासदी भारत की सबसे बड़ी औद्योगिक दुर्घटना है, जिसमें सरकारी तौर पर 4000 से अधिक लोग मारे गये और लाखों लोग अन्य बीमारियों से प्रभावित हुए। उस वक्त मदर टेरेसा ताबड़तोड़ कलकत्ता से भोपाल आईं, किसलिये?क्या प्रभावितों की मदद करने?

जी नहीं, **बल्कि यह अनुरोध करने कि यूनियन कार्बाईड के मैनेजमेंट को माफ कर दिया जाना चाहिये और अन्ततः वही हुआ भी, वारेन एंडरसन ने अपनी बाकी की जिन्दगी अमेरिका में आराम से बिताई।** भारत सरकार हमेशा की तरह किसी को सजा दिलवा पाना तो दूर, ठीक से मुकदमा तक नहीं कायम कर पाई।

अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पत्रकार क्रिस्टोफर हिचेन्स ने 1994 में एक डॉक्यूमेंट्री बनाई थी, जिसमें मदर टेरेसा के सभी क्रियाकलापों पर विस्तार से रोशनी डाली गई थी। बाद में यह फिल्म ब्रिटेन के चैनल–फोर पर प्रदर्शित हुई और इसने काफी लोकप्रियता अर्जित की। बाद में अपने कोलकाता प्रवास के अनुभव पर उन्होंने एक किताब भी लिखी **"हैल्स एन्जेल" (नर्क की परी)।**

इसमें उन्होंने कहा है कि "कैथोलिक समुदाय विश्व का सबसे ताकतवर समुदाय है। जिन्हें पोप नियंत्रित करते हैं, चैरिटी चलाना, मिशनरियाँ चलाना, धर्म परिवर्तन आदि इनके मुख्य काम है। **जाहिर है कि मदर टेरेसा को टेम्पलटन सम्मान, नोबल सम्मान, मानद अमेरिकी नागरिकता जैसे कई सम्मान इसी कारण से मिले।**

ईसाइयों के लिए यही मदर टेरेसा दिल्ली में 1994 में दलित ईसाइयों के आरक्षण की हिमायत करने के लिए धरने पर बैठी थी। **तब तत्कालीन मंत्री सुषमा स्वराज ने उनसें पूछा था कि क्या मदर दलित ईसाई जैसे उद्‌बोधनों के रूप में चर्च में जातिवाद का प्रवेश करवाना चाहती हैं।** महाराष्ट्र में 1947 में देश आजाद होते समय अनेक मिशन के चर्चों को आर्यसमाज ने खरीद लिया क्यूंकि उनका सञ्चालन करने वाले ईसाई इंग्लैंड लौट गए थे। कुछ दशकों के पश्चात ईसाइयों ने उस संपत्ति को दोबारा से आर्यसमाज से खरीदने का दबाव बनाया। आर्यसमाज के अधिकारियों द्वारा मना करने पर **मदर टेरेसा द्वारा आर्यसमाज के पदाधिकारियों को देख लेने की धमकी दी गई थी। कमाल की संत?थी।**

मदर टेरेसा जब कभी बीमार हुईं तो उन्हें बेहतरीन से बेहतरीन कार्पोरेट अस्पताल में भर्ती किया गया। उन्हें हमेशा महंगा से महंगा इलाज उपलब्ध करवाया गया। यही उपचार यदि वे अनाथ और गरीब बच्चों (जिनके नाम पर उन्हें लाखों डालर का चन्दा मिलता रहा) को भी दिलवाती तो कोई बात होती, लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ। एक बार कैंसर से कराहते एक मरीज से उन्होंने कहा कि "तुम्हारा दर्द ठीक वैसा ही है जैसा ईसा मसीह को सूली पर हुआ था, शायद महान मसीह तुम्हें चूम रहे हैं। तब मरीज ने कहा कि "प्रार्थना कीजिये कि जल्दी से ईसा मुझे चूमना बन्द करे"।

शेष पृष्ठ 20 पर.....

(8 सित. से प्रारम्भ) एस.एम.एस. इन्वेस्टमेंट ग्राउण्ड, रामबाग सर्किल, जयपुर में 10 सितम्बर को अपराह्न वैदिक शक्ति संघ (संस्कृत भारती) राज0सार्व0 प्रन्यास मण्डल देवस्थान विभाग, राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर राजस्थान सरकार के संयुक्त तत्वावधान में अन्तरराष्ट्रीय वैदिक सम्मेलन तथा 'वेदों में शक्ति तत्व' विषयक संगोष्ठी आयोजित की गई। एस0डी0 शर्मा अध्यक्ष राज0सार्व0प्र0म0, देवस्थान विभाग व डा0 जया दवे, अध्यक्ष राज0 संस्कृत अकादमी की उपस्थिति व श्री श्री 1008 ब्रह्मपीठाधीश्वर श्री नारायणदास जी, त्रिवेणी धाम की अध्यक्षता में आयोजित संगोष्ठी के मुख्य वक्ता मिथिला विद्वत परिषद, दरभंगा के अध्यक्ष पं. जीवेश्वर मिश्र (विहिप–केन्द्रीय उपाध्यक्ष) रहे। पं. मिश्र का बीज वक्तव्य प्रस्तुत है––सं.

वेदों में शक्ति तत्व

समग्र आध्यात्मिक सम्प्रदायों का श्रोत वेद

वेद अपौरूषेय है, यह सर्वमान्य सत्य है 'वेदोऽखिलोधर्ममूलम्' उसमें गर्भित मंत्रों को गहनतम एवं कठोरतम तप के माध्यम से ऋषियों ने चैतन्य दृष्टि से देखा। सत्य दृष्टा ऋषिगण समग्र सत्य को जाना जो भूत– वर्तमान तथा भविष्य तीनों कालों में संपूर्ण ब्रह्माण्ड में उद्भाषित होने वाले ज्ञान पुंज हैं। समग्रशास्त्र भण्डार है वेद। वेद मंत्रों का रहस्य सायन जैसे महान व्याख्याकार की दृष्टि में भी समग्र रूप से उदघाटित न हो सका। परिणामस्वरूप कर्मकाण्ड मूलक अर्थ में उनकी बौद्धिक ऊर्जा समाहित रह गयी। यह भी सत्य है कि वेद को लोक जीवन में उतारने की दिशा में सायन का योगदान अप्रतिम है। किंतु सायन वेद भाष्य आश्रित यूरोपीय टीकाकार भाष्यकार आज भी वेद के कर्मकाण्डपरक अर्थ की माया से बाहर न हो सके।

हमें यह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि यास्क ने वेद के रहस्य ज्ञान को तप–पूत जनों के निमित्त वेद– रहस्य द्वार को खोल दिया। यास्क मुनि के दिए संकेत को हमें आज भी गंभीरतापूर्वक स्वीकार करना चाहिए। अनादिकाल से भारतीय मानस इस अर्थ को सहेज रखी है कि वेद के ऋषि– कवि–द्रष्टा, एक महान आध्यात्मिक गुह्य ज्ञान से युक्त थे जहां तक साधारण बौद्धिक मानस की पहुंच नहीं हो सकती।

यास्क मुनि ने 'निरूक्त' में कहा है कि वेद की व्याख्या से अनेक सम्प्रदाय जुडे हैं– याज्ञिक अर्थात कर्मकाण्डीय व्याख्या का सम्प्रदाय, गाथात्मक व्याख्या का सम्प्रदाय, वैयाकरणों– व्युत्पतिशात्रियों का सम्प्रदाय, नैरुक्तों एवं नैयायिकों का सम्प्रदाय एवं आध्यात्मिक व्याख्या का सम्प्रदाय मुनियास्क ने घोषित कर दी है कि ज्ञान त्रिविधा है, अस्तु, वेद मंत्रों के अर्थ भी विविध होते हैं– अधियज्ञ या कर्मकांडिय, अधिदैवत या देवता संबंधी और अंतिम आध्यात्मिक। परन्तु इन तीनों में अंतिम आध्यात्मिक ज्ञान का प्रतिपादक अर्थ ही वेद का रहस्य ज्ञान है क्योंकि आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् शेष ज्ञान का प्रतिपादक अर्थ ही वेद का रहस्य ज्ञान है क्योंकि आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् शेष ज्ञान समाप्त हो जाते हैं। यही आध्यात्मिक ज्ञान त्राण करने वाला है।

अस्तु, हम कह सकते हैं कि वेदों के दोहरे अर्थ है – एक गुह्य अर्थ तथा दूसरा लौकिक अर्थ। बाह्य लौकिक अर्थ आवरण का कार्य संपादन करता है जिसे हम मानुषी सफलता का कारण कह सकते हैं। दैवी अर्थ आध्यात्मिक पूर्णता का श्रोत कहा जाता है। वेद में सर्वत्र पायी जानेवाली द्वयर्थकर्ता में एक ही शब्द द्वारा प्रतीक तता प्रतीक से अभिप्रेत वस्तु दोनों अभिहित होते हैं।

देव शक्तियों में संरक्षित लोक जीवन

वैदिक देवता विश्वव्यापी देवगण हैं। इन देवगणों की शक्तियां इनके व्यक्तित्व, दिव्य सत्ता (तत् एकम्, तत्सत्यम्, एकं सत्यम्। ऋ.वे. 10.129. 2,3.39.5,1.164.46) अतिविशिष्ट सारभूत शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये देवगण जिनका यजन करना है वे हैं प्रथम में अग्नि क्योंकि इनके बिना यज्ञिय ज्वाला आत्मा की वेदी पर प्रदीप्त हो नहीं हो सकती। अग्नि की वह ज्वाला है संकल्प की सप्त जिह्वा शक्ति। ये हैं परमेश्वर की एक ज्ञान प्रेरित शक्ति। यह सचेतन अग्नि हमारी मर्त्यसक्ता के अंदर अमर्त्य अतिथि है। तथा पृथ्वी एवं द्यौ के बीच मध्यस्थता करने वाला एक पवित्र पुरोहित तथा दिव्य कार्यकर्ता है जो हमारे द्वारा अर्पित हवि को उच्चतर शक्तियों तक ले जाता है और प्रकाश तथा आनंद हमारी मानता के अंदर ले आता है।

अग्निदेव के बाद दूसरा नाम आता है शक्तिशाली इन्द्र का। वह शुद्ध सत् की शक्ति है जो भागवतमन के रूप में स्वतः अभिव्यक्त है, जिस प्रकार अग्नि एक ध्रुव के रूप में अपनी धारा को पृथ्वी से द्यौ की और भेजता है उसी प्रकार इन्द्र, दूसरा ध्रुव शक्ति से आविष्ट प्रकाश का ध्रुव होने से दिव्य प्रकाश को द्यौ से पृथ्वी की ओर उतारता है। वह भागवत मन इन्द्र इस जगत के अंधकार तथा विभाजन का विनाश करता है तथा जीवनदायक दिव्यजल की वर्षा करता है। अन्तर्ज्ञान (शुनी) की खोज कर छिपी हुई ज्योति को ढूंढ निकालता है तथा हमारी मनोमय सत्ता के द्युलोक में सत्य के सूर्य को उच्चस्थ कर देता है।

सूर्यदेवता हैं, सत्य, ज्ञान एवं क्रिया के सत्य का स्वामी। ये हैं हमारी आत्मा का पिता, पोषक तथा प्रकाशदाता। यह सूर्य हमारे पास दिव्य उषाओं के पथ से आता है और हमारे लिए सर्वोच्च, परम आनंद को अनावृत कर देता है। इसके बाद सोम आनंद के प्रितिनिधिभूत देवता हैं। ये पृथ्वी के प्ररोहों से, पौधों से, सत्ता के जलों से अमरतादायक रस का संचय कर देवताओं की हविरूप में प्रदान करते

शेष पृष्ठ 22 पर....

विदर्भ के 19 में से 9 जिलों में इन्द्रधनुषी छटा बिखेरते 83 सेवा प्रकल्प

दि0 26 अगस्त से 31 अगस्त 2016 तक का परिषद के सेवा कार्यों का प्रत्यक्ष दर्शन, अवलोकन, मूल्यांकन हेतु केन्द्रीय प्रवास योजनान्तर्गत विदर्भ प्रांत का प्रवास हुआ। प्रांत के सेवा प्रमुख गणेश काळकर एवं सह सेवा प्रमुख रवि किरण चर्जन दोनों प्रवास के समय साथ रहे।

ब्रह्मपुर प्रकल्प– चन्द्रपुर जिले का ब्रह्मपुर प्रकल्प जहां पर वनवासी बच्चों का छात्रावास एवं विद्यालय का अवलोकन किया। प्रबंध समिति एवं न्यासी गणों के साथ बैठकें की, प्रकल्प पर बालक/बालिकाओं को की संख्या 782 एवं शिक्षक/शिक्षिकाओं की संख्या 26 है। यह प्रकल्प 1986 में प्रारम्भ हुआ अबतक प्रकल्प से 2000 बालक/बालिकाओं ने अध्ययन कर निकल चुके हैं। जो वनवासी बच्चे शिक्षा से पूरी

तरह वंचित हैं वे आज इस परिषद के प्रकल्प के माध्यम से शिक्षा व संस्कार प्राप्तकर एक योग्य नागरिक के रूप में आगे आये हैं। अपने पर आत्मनिर्भर हो रहे हैं।

छात्रावास व्यवस्था 2015 से प्रारंभ है। विद्यालय में छात्रावास के अतिरिक्त दैनिक रूप से अध्यापन करने वाले एवं छात्र/छात्रायें भी हैं। छात्रावास में रहने वाले बालकों की संख्या 80 है। कक्षा दशवीं का गत वर्ष का परिणाम शत–प्रतिशत रहा। विद्यालय न्यास का अपना है परन्तु छात्रावास किराये के मकान में चलता है। न्यासीगण एवं प्रबंध समिति के बंधु नये छात्रावास के भवन का निर्माण हो। जमीन लेने की योजना बना रहे हैं, 5 एकड़ भूमि का चयन किया है परन्तु अर्थाभाव के कारण अभी काम रुका है।

इस प्रकल्प की विशेषता यह है कि प्रारम्भ से यानि 26 वर्षों से इसके प्रधानाचार्य एक मुस्लिम महिला है जो बड़े ही कुशलता से सारा संचालन कर रही हैं। इनके प्रयास से 10 मुस्लिम बालक/बालिकायें पढ़ रही हैं।

प्रतिवर्ष यहां पर स्वास्थ्य परीक्षण एवं औषधि उपचार हेतु कुशल चिकित्सकों की टीम आती है और शिविर का आयोजन किया जाता है। यह कार्य गत 4 वर्षों से चल रहा है। इसके कारण बच्चों का तो स्वास्थ्य परीक्षण कार्य होता ही है स्थानीय वनवासी, गरीब सैकड़ों बंधुओं को भी स्वास्थ्य लाभ मिलता है।

न्यास का कार्य विधिवत तरीके से चल रहा है। सरकारी अनुदान भी आंशिक रूप से प्राप्त हो रहा है। इस प्रकल्प के प्रमुख दीपकरन जोशी है।

उदासा/आवासीय विद्यालय

दूसरा प्रकल्प नागपुर जिले के दुर्गम क्षेत्र उदासा में है। यहां पर भी बालक/बालिकाओं का छात्रावास एवं विद्यालय है। विद्यालय में दैनिक छात्र/छात्रायें भी आते हैं। यह प्रकल्प 1999 से प्रारम्भ हुआ है। इस प्रकल्प के प्रमुख गणेश मोकाशी हैं। इस प्रकल्प से अबतक 1388 बच्चे शिक्षा, संस्कार प्राप्तकर जा चुके हैं और एक योग्य नागरिक के रूप में समाज के विविध क्षेत्रों में यशस्वी जीवनयापन कर रहे हैं। वर्तमान में 476 बालक/बालिकायें अध्ययनरत हैं। छात्रावास में 400 छात्र/छात्रायें हैं, यहां पर 12 शिक्षक/शिक्षिकायें कार्यरत हैं।

विद्यालय भवन का निर्माण कार्य प्रगति पर है। छात्रावास के बालकों द्वारा कृषि कार्य का भी अनुभव प्राप्त किया जाता है। प्रकल्प की अपनी पर्याप्त भूमि है। यहां पर प्राथमिक एवं माध्यमिक इस प्रकार से 2 व्यवस्थायें हैं दोनों के अलग–अलग प्रधानाचार्य एवं सहयोगी शिक्षणगण हैं। दशवीं का प्रथम बार परीक्षा में प्रवेश होगा।

प्लेटफार्म ज्ञान मंदिर

तीसरा प्रकल्प जो नागपुर शहर में हैं, प्लेटफार्म ज्ञान

सेवाप्रकल्प में भगवान श्रीकृष्ण- जन्मोत्सव

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एवं विश्व हिन्दू परिषद स्थापना दिवस के अवसर पर बृज प्रांत (उ0प्र0) में अलीगढ़ जिले के अतरोली तहसील अंतर्गत खुलावली ग्राम में निर्मित श्री राधाकृष्ण मंदिर सहित 3 बीघा भूमि विश्व हिन्दू परिषद सेवा विभाग को 2014 में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन एवं इस क्षेत्र के क्षेत्रीय सेवा प्रमुख राधेश्याम द्विवेदी की उपस्थिति में भूमिदान कार्यक्रम भूमिदाता भूदत्त शर्मा एवं श्रीमती कुसुम शर्मा जी के द्वारा सम्पन्न हो गया था।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर इस मंदिर में स्थानीय समाज के साथ बड़े धूम–धाम से परिषद का स्थापना दिवस एवं भगवान का प्रकटोत्सव मनाया गया।

मंदिर का अवलोकन किया। यह अपने आप में अलग प्रकार का प्रकल्प है। रेलवे स्टेशनों से पुलिस के द्वारा प्राप्त बालक एवं महानगर पालिका द्वारा प्राप्त भवन में परिषद द्वारा संचालित यह प्रकल्प है। यहां पर 40 बच्चे हैं कुछ बच्चों को उनके बताये अनुसार उनके अभिभावकों तक पहुंचा दिया गया है। बच्चों की दिनचर्या में अलग–अलग विद्यालयों में जाना शिक्षा ग्रहण करना तथा प्रकल्प द्वारा दैनिक क्रम के अनुसार व्यवस्था है।

विश्व हिन्दू परिषद के प्रदेश समिति एवं सेवा के प्रांत की टोली बैठक, न्यास के अध्यक्ष श्री सुभाश अग्रवाल जी के निवास पर हुई। प्रांत मे सेवा का अपना स्वतंत्र कार्य तो है साथ ही 6 अन्य न्यास भी अलग–अलग स्थानों पर बने हैं। कुल 8 न्यासों के माध्यम से 20 बड़े व 63 छोटे प्रकल्प प्रांत भर में संचालित हो रहे हैं। प्रांत के सेवा कार्यों की संख्या 83 है परन्तु ये प्रकल्प प्रांत के 19 जिलों से 9 जिलों में ही स्थित हैं। बाकी 10 जिलों में सेवा कार्यों के विस्तार की प्रचुर सम्भावनायें हैं । प्रांत के न्यासियों एवं परिषद के पदाधिकारियों से अनुरोध किया गया कि सभी जिले 2017 तक प्रकल्प युक्त हो जायें, ऐसा प्रयास हो। प्रांत का न्यास पूर्णतः वैधानिक रूप से संचालित है। न्यासों का ऑडिट होता है। 80जी एवं एफ.सी.आर.ए. की प्राथमिक सुविधा भी उपलब्ध है।

प्रांत सेवा विभाग की बड़ी बैठक भी हुयी, प्रांत के विविध जिलों से जिला सेवा प्रमुख एवं प्रकल्पों के प्रमुख बुलाये गये । इन सबके साथ भी प्रकल्पों का विस्तृत विवरण प्राप्त किया तथा परिषद के सेवा विभाग की अन्यान्य प्राथमिकताओं की भी चर्चा कार्यकर्ताओं से की।

वर्धा जिला केन्द्र

इसके पश्चात वर्धा जिला केन्द्र पर कार्यकर्ताओं से भेंट हुयी प्रकल्पों का तथा वर्धा का एक संकलित वृत्त चित्र प्रस्तुत किया। अलग–अलग प्रकल्पों के दर्शन के लिये निकले। जिला मंत्री संजय जी एवं जिला सेवा प्रमुख संजय जी दोनों साथ में रहे । यहां पर गरीब युवाओं को रोजगारोन्मुख प्रशिक्षण देना तथा उनको कहीं न कहीं नियुक्ति देने का प्रयास चल रहा है। इनकी सूची में जिले के गरीब–दुर्गम क्षेत्र के 500 युवाओं की सूची है। जिसमें से 150 युवाओं का इन्होंने रोजगार उपलब्ध कराया है।

2 करोड का अन्त्येष्टि प्रकल्प

अंतिम क्रिया (शमशान घाट) का प्रकल्प भी आधुनिक तरीके से यहां पर बन रहा है। इसके बन जाने के पश्चात एक उदाहरणीय प्रकल्प होगा। 2 करोड़ का प्रोजेक्ट है 50 लाख खर्च हो गये हैं। आधुनिक पद्धति से गोबर के उपलों के माध्यम 100 उपलों से पूरा शवदाह सम्भव होगा। इस प्रयास में प्रशान्त हरतालकर जी केन्द्रीय मंत्री विश्व हिन्दू परिषद की प्रेरणा है।

गरीबों के घर दीपावली

गरीबों के घर दीपावली यह भी यहां का एक प्रयोग वर्धा नगर में गत 2 वर्षों से ये प्रयास चल रहा है। सेवा बस्तियों में ग्रामों, गरीब परिवारों में पैकेट बनाकर उसमें मोमबत्ती, दियासलाई, मिठाई श्री गणेश लक्ष्मी जी की छोटी मूर्तियां रहती हैं। एक गाड़ी ऐसे पैकेट रखकर गत वर्षों में 1500 परिवारों तक पहुंचाने का काम किया गया। आगे यह प्रयास बढ़ाने का इनका संकल्प है।

अकोला में बालिका छात्रावास– पालनागृह

अकोला जिला केन्द्र पर पहुंचे वहां पर अपना एक बालिकाओं का छात्रावास तथा गत 2 वर्षों से एक पालनगृह प्रारंभ हुआ है। प्रकल्प का अपना भवन है। एक ही भवन में दोनों प्रकल्प चलते हैं, एक ही न्यास के माध्यम से चलते हैं। दादा जी इस प्रकल्प के प्रमुख हैं। पालनागृह से अब तक 68 बच्चों को गोद दिये गये हैं। वर्तमान में 8 बच्चे पालनागृह में हैं। बालिका छात्रावास में 40 बालिकायें हैं जो अलग विद्यालयों में अलग–अलग 2 कक्षाओं में पढ़ती हैं।

न्यास की दैनिक व्यवस्था ठीक है। 80 जी है, ऑडिट होता है। न्यास पर 25 लाख रुपये का कर्जा है। भवन बनाते समय कर्जा मिल गया। **क्रमशः**

अरविंदभाई ब्रह्मभट्ट (केन्द्रीय मंत्री विश्व हिन्दू परिषद एवं अ0भा0 सेवा प्रमुख) की प्रेरणास्पद उपस्थिति से कार्यक्रम 3 दिन चला। पहले 2 दिन व्यासपीठ से पू. शास्त्री ललित किशोर जी (वृंदावन) ने श्रीकृष्ण कथा का रसपान कराया। उक्त सम्पूर्ण कार्यक्रम के मुख्य यजमान अरविंदभाई जी रहे। भगवान के जन्म के बाद अगले दिन विशाल भण्डारे (सहभोज) का आयोजन किया गया। भूमिदाता बहन श्रीमती कुसुम शर्मा जी पूरे समय तथा कार्यक्रम के सूत्रधार (संयोजक) इस प्रकल्प के न्यासी एवं महामंत्री रामकुमार आर्य थे। परिषद प्रांत के सामाजिक समरसता प्रमुख जगवीर मिश्र तथा न्यास के उपाध्यक्ष परिषद प्रांत कार्यक्रम प्रमुख बृज प्रांत, प्रदीप जी तथा स्थानीय प्रमुख सहयोगी कार्यकर्ता, सोमपाल यादव, श्रीमती जिया यादव का विशेष योगदान रहा। स्थानीय ग्रामवासियों से कार्यक्रम को सफल बनाने में भरपूर सहयोग मिला।

मठ-मंदिर चिकित्सा व शिक्षा केन्द्र बने, विहिप ने बढ़ाए कदम

नई दिल्ली, 28 अगस्त। 'हमारे मठ–मंदिर हिन्दू समाज के सद्विचार–सद्संस्कृति एवं संस्कारों के रक्षक हैं। मठ–मंदिर द्वारा चलने वाले, अनेक प्रकार के सेवा प्रकल्प (चिकित्सा) के द्वारा समाज को स्वास्थ्य एवं शिक्षा मंदिरों के द्वारा सद्संकार समाज को हमेशा मिलते हैं। समाज जागरण की दृष्टि से मंदिरों के द्वारा समाज के लिए बड़े प्रकल्प चलाने की आवश्यकता है। बढती मंहगाई के चलते समाज अच्छी शिक्षा और चिकित्सा से वंचित है, अखिल भारतीय मंदिर प्रबन्धक परिषद का भी गठन इसी उद्देश्यों को लेकर हुआ है।' उक्त विचार विहिप संगठन महामंत्री दिनेश चन्द्र ने विहिप मठ–मंदिर आयाम की अ0भा0 बैठक का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए।

द्वितीय सत्र में डॉ. प्रवीण तोगड़िया विश्व हिन्दू परिषद– कार्याध्यक्ष ने कहा कि मठ–मंदिर हिन्दू समाज के चेतना के केन्द्र रहे हैं। सेवा, जागरण के कार्यक्रमों के माध्यम से समाज को संगठित करने का जहाँ हमारा प्रयास है, वहीं निर्धन समाज को धर्मान्तरण से बचाने में मंदिरों की अहम भूमिका है।

27 अगस्त को विश्व हिन्दू परिषद के मठ–मंदिर विभाग की अखिल भारतीय बैठक संकट मोचन आश्रम में प्रातः 10.00 बजे प्रारम्भ हुई। तृतीय सत्र में मिलिन्द पराण्डे विहिप केन्द्रीय मंत्री ने मठ–मंदिर आयाम की विधि एवं कार्यशैली को निरूपित करते हुए कहा कि मंदिरों की संख्या लाखों में है तो हम सरकार के ऊपर निर्भर क्यों रहें, समाज के धन का उपयोग समाज के लिए होना चाहिए, ये सब रचनात्मक कार्य मंदिर स्वयं करते ही हैं।

चतुर्थ सत्र में मठ–मंदिर आयाम प्रमुख हरिशंकर ने मठ–मंदिर आयाम का कार्य प्रान्त/जिला एवं ग्रामीण क्षेत्र तक खड़ा करना है, एतदर्थ कार्ययोजना प्रस्तुत की। रात्रि में आयोजित सत्संग में देशभर से आए 25 प्रान्तों के प्रमुखों ने कहा कि प्रत्येक मंदिर में सत्संग और साप्ताहिक महाआरती से ही हिन्दू समाज मंदिर से जुड़ेगा। इलेक्ट्रीक घण्टों को प्रतिबन्धित करने के लिए सभी ने सुझाव दिया।

दूसरे दिन (28 अगस्त) सभी मठ–मंदिर प्रमुखों ने अपने प्रदेश की परिस्थितियों का वर्णन करते हुए कहा कि सरकार हमारे मंदिरों को अधिग्रहीत कर रही है, मंदिरों की आय से इस्लाम और ईसाइयत का पोषण हो रहा है, अब सभी मंदिर संगठित होकर अधिग्रहीत मंदिरों को सरकार से वापिस लेने के लिए अनुभवी वकीलों का पैनल बनाएंगे।

समारोप सत्र में विहिप संयुक्त महामंत्री वाई. राघवुलू ने कहा कि सभी मंदिरों द्वारा सेवा प्रकल्पों के माध्यम से हिन्दू समाज के लिए, शिक्षा, चिकित्सा और स्वास्थ्य तथा संस्कार के केन्द्र चलाने से ही हिन्दू पुनः सशक्त एवं समृद्धशाली बनेगा।

35 प्रान्त प्रमुखों ने भाग लिया। बैठक में अ0भा0 मंदिर प्रबंधक परिषद के मंत्री रमेश गुप्त 'अनिल' सहित धर्मनारायण जी, कोटेश्वर राव जी, जुगलकिशोर जी केन्द्रीय मंत्री की विशेष उपस्थिति रही।

प्रस्तुति : हरिशंकर
केन्द्रीय सहमंत्री
एवं अ0 भा0 मठ–मंदिर प्रमुख
radhe2006@gmail.com

प्रांतीय प्रचार कार्यशाला

विश्व हिंदू परिषद प. महाराष्ट्र प्रांत प्रचार प्रसिद्धि कार्यविभाग कार्यशाला २ सितम्बर २०१६, शुक्रवार को प्रांत कार्यालय, पुणे मे संपन्न हुई। प्रांत प्रचार कार्यविभाग की कार्ययोजना और कार्यविस्तार की आवश्यकता के अनुसार कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें ६ जिल्हों से ६ कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

कार्ययोजना – प्रांत स्तर, जिला स्तर, महानगर स्तर पर प्रचार प्रसिद्धि कार्यविभाग की टोली बनाना निश्चित हुआ। कार्यविस्तार करते समय–

१) प्रचार माध्यामों के पत्रकार एवं वार्ताहरों से संपर्क करना, सूची बनाना ।
२) सूचना फलक एवं भित्तीपत्रकों की सूची बनाना ।

कार्याशाला के प्रथम सत्र मे प्रांतमंत्री विजयराव देशपांडे ने प्रचार प्रसिद्धि कार्यविभाग के आवश्यकता पर मार्गदर्शन किया। कार्ययोजना एवं कार्यविस्तार प्रांत प्रचार प्रसिद्धि समिती सदस्य विवेक सोनक ने विस्तार से कथन किया।

तृतीय सत्र में व्हीडीओ कॉन्फरन्सिंग का प्रात्यक्षिक हुआ। मीनलताई भोसलें ने केंद्रीय कार्यशाला का वृत्त व्हीडीओ कॉन्फरन्सिंग के द्वारा सभी के समक्ष रखा। Website power point presentation विवेक सोनक ने मार्गदर्शन किया।

प्रचार विभाग मे आनेवाली शंकाओं का समाधान मकरंद घळसासी (केंद्रीय प्रचार विभाग के वेबसाईट टोली के सदस्य) ने किया। प्रांत संगठन मंत्री भाऊराव कुदळे ने कार्यशाला का समारोप किया।

vivek.sonak@gmail.com

पूर्णकालिक वर्ग

08 सितम्बर। भोपाल क्षेत्र का पूर्णकालिकों का वर्ग सलकनपुर (म.प्र.) में सम्पन्न हुआ, जिसमें राघवुलू जी, विनायकराव जी, दिनेश जी उपाध्याय, राजेश तिवारी सहित १०१ कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

rajeshtiwarivhp@gmail.com

तुलसी शोभायात्रा से पर्यावरण व गोरक्षा का संदेश

खतौली (उ0प्र0), 26 अगस्त। विहिप के स्थापना दिवस पर सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने शहर में धूमधाम से तुलसी शोभायात्रा निकाली। यात्रा में पुरुष और महिलाएं तुलसी का पौधा लेकर शामिल हुए। इस यात्रा के जरिए विहिप ने पर्यावरण व गोरक्षा का संदेश दिया।

गीता भवन से शुरू हुई तुलसी शोभायात्रा नगर का भ्रमण कर वहीं संपन्न हुई। शोभायात्रा का शुभारंभ मुख्य अतिथि नगर पालिका चेयरमैन पारस जैन ने भगवा ध्वज फहराकर किया। पारस जैन व विहिप नेताओं की अगुवाई में निकाली गई यात्रा में महिलाएं व पुरुष

पर्यावरण व गोरक्षा का संदेश लिखी तख्तियां व तुलसी के पौधे लेकर चल रहे थे।

विहिप के प्रदेश उपाध्यक्ष डा. रणजीत सिंह राघव ने विहिप के स्थापना के उद्देश्य और तुलसी व श्रीष्ण के चरित्र पर प्रकाश डाला। समाज से तिलक, चोटी, यज्ञोपवीत धारण करने की अपील की। पारस जैन ने तुलसी को सिर्फ औषधि ही नहीं, बल्कि हमारी संसति की धरोहर बताया। शोभायात्रा में प्रांतीय सह मंत्री डा. चन्द्रमोहन शर्मा, राधेश्याम विश्वकर्मा, जिलाध्यक्ष सचिन सिंहल, प्रवीण गुप्ता व ठाकुर भूपेन्द्र भी मौजूद रहे।

gopal.sharma.12kht@gmail.com

गोष्ठी

रामपुर, 11 सितंबर। विश्व हिन्दू परिषद के प्रांत सह संगठन मंत्री सुदर्शन चक्र ने कहा कि हिन्दू समाज पर अत्याचार हो रहे हैं। ऐसे में समाज के युवाओं को एकजुट होना चाहिए। वे ज्वालानगर स्थित मायादेवी धर्मशाला में गणेशोत्सव पर हुई गोष्ठी में बोल रहे थे।

विभाग संगठन मंत्री रामानंद ने कहा कि प्रदेश के कैबिनेट मंत्री मोहम्मद आजम खां ने बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर पर अशोभनीय टिप्पणी की। यह दुखद है। भारत सिंह यादव, जिला संयोजक उपेन्द्र मिश्रा ने भी संबोधित किया। विभाग संगठन मंत्री देवेन्द्र सोम, अनिल वशिष्ठ, जुगेश अरोडा कुक्कू, अनुराग शर्मा, संजू बाबा, शिवा शर्मा, जुगल किशोर यादव, नरेश चन्द्रवंशी, संजीव यादव, विवेक आनंद, नरेश वाल्मीकी, हरिओम वाल्मीकी, सर्वेश गंगवार भी उपस्थित रहे।

saurabhsharma79.ss.ss@gmail.com

अमरोहा में विहिप के अखंड भारत संकल्प दिवस कार्यक्रम में मंचस्थ क्षेत्रीय संगठन मंत्री ईश्वरी प्रसाद एवं सह प्रान्त संगठन मंत्री मेरठ प्रान्त सुदर्शन चक्र।

ranarajesh327@gmail.com

धर्मनारायण शर्मा

विजय पर्व का संदेश

हम विजय पर्व मना रहे है। हर वर्ष हम विजयदशमी को रावण, कुम्भकरण, मेघनाद के पुतलों को फूँकते हैं परन्तु सवाल है कि विजय किस पर करनी है? भगवान श्रीराम ने रावण पर विजय प्राप्त की, भगवति महाशक्ति ने चण्ड–मुण्ड का संहार कर अन्तमें महिसासूर को यमलोक पहुँचाया। ये सभी विजय पुराण काल की है। हमें अब किस–किस पर विजय प्राप्त करनी है और वह कैसे होगी? सबसे पूर्व तो अपने पर विजय प्राप्त करनी है। वह विजय काम, क्रोध, मद मोह, लोभ, मत्सर पर विजय प्राप्त करनी है। हम में राग भरा पड़ा है, द्वैश से हम लबाबल है, इर्षा लम्बे काल से हम पर सवार हैं और अभिमान में हम झूम रहे हैं। अनेक विकारों से ग्रसित रहकर हम संस्कृति स्थापित नहीं कर सकते। यदि समर्थ व सफल भी बने तो यह विजय संस्कृति की न होकर विकृति की विजय होगी, यह विजय रावणी, निशाचरी विजय होगी। सच तो यह है कि विजय का अभियान अपने से आरम्भ करना होगा तभी और तभी समग्रविजय, सच्ची विजय संभव होगी।

जब तक **'त्यजेत एकम् कुलस्यार्थे'** के भाव की तरह अपने जीवन में त्याग की दृष्टि, कार्यकृति में विशालता निर्माण नहीं करेंगे तबतक सच्ची विजय आकाश कुसुम ही बनी रहेगी। जबतक जीवन में विराट का प्रादुर्भाव नहीं होगा, जबतक व्यक्तित्व में शील का श्रृंगार नहीं होगा, जबतक अपने में शिवत्व का साक्षात्कार नहीं होगा तबतक विजय प्राप्त करना असंभव ही बना रहेगा।

समाज व्यक्तियों से मिलकर बनता है। जबतक व्यक्ति संकुचित बना रहेगा तबतक समाज के प्रति कर्तव्य का भान नहीं हो सकेगा। समाज का भी अपना सामूहिक मन होता है। कईबार देखने में आता है कि एक व्यक्ति अत्यन्त सज्जन है, वह उठापटक से दूर रहता है और ज्ञानवान है परन्तु आन्दोलन के काल में यह व्यक्ति भीड़ में है, यदि भीड़ पत्थर फेंकना आरम्भ करती है तो यह व्यक्ति सामूहिक मन के प्रभाव में आकर एक–दो पत्थर फेंक ही देगा। यदि इस व्यक्ति से हुल्लड़ के बाद मिला जाय तो यह अफसोस के साथ कहेगा कि न जाने मैंने कैसे पत्थर फेंका, मैं इस कार्य को गलत मानता हूँ मैंने जो किया उसपर मुझे बहुत पश्चाताप है। सामूहिक मन रचना व दिव्वंश दोनों कर सकता है। सामाजिक भाव में सामूहिकता बहुत आवश्यक है। संगठन का एक सशक्त लक्षण सामूहिकता है। वेद भगवान भी कह रहे हैं–'संवो मनासि जानताम्' हमारा मन एक हो इसका अर्थ ही सामूहिकता है। समाज की विशेषता सामूहिकता में निहित है और उसका प्रभावी प्रकटिकरण भी सामूहिक क्रिया से ही परिणामकारी होता है। सामूहिक क्रिया व सामूहिक प्रतिकार से ही अन्यों को सच्चे अर्थ में समाज के अस्तित्व का अनुभव होता है।

ऐसा राष्ट्र समाज की संस्कृति के आधार पर श्रेष्ठ राष्ट्रों की पंक्ति में भी श्रेष्ठता प्राप्त करता है। राष्ट्र को राष्ट्ररूप में अभिव्यक्त संस्कृति युक्त समाज ही करता है। राष्ट्र शक्तिवान् समाज के द्वारा बनता है इसका अर्थ है कि समाज राष्ट्र की सुरक्षा समृद्धि हेतु विद्यालय, महाविद्यालय तकनिकी महाविद्यालयों द्वारा अपनी नव पीढ़ी को संस्कारित, शिक्षित बनाकर गुण सम्पन्न बनाता है। विश्व के अग्रगण्य राष्ट्रों का अध्ययन कर उसके अनुसार नव पीढ़ी का निर्माण करता है। राष्ट्र को सुरक्षा चाहिए, सुरक्षा के लिये दिव्यास्त्र चाहिए तो वह समाज दिव्यास्त्र निर्माण करता है। यदि राष्ट्र को बड़ी मात्रा में तज्ञ टेक्टीशियन चाहिए तो समाज उन्हें तैयार करता है। यदि राष्ट्र को विभिन्न प्रकार के उद्योग–धन्धों की आवश्यकता है तो समाज उद्योगों का भारी मात्रा में निर्माण कर समृद्धि निर्माण करता है। समाज राष्ट्र का आवश्यक अंग है। समाज ही राष्ट्रीय गौरव निर्माण का सशक्त साधन है या प्रमुख है।

भारत के परिपेक्ष में भी इसी प्रकार की सोच का पालन करना होगा क्योंकि हमारी सीमा पर शत्रु हैं और देश में भी कुछ उनके हाथों के हस्तक व समर्थक हैं। कुछ बिकाउमाल की तरह उनके इशारों से उनकी योजना को साकार करने में लगे हैं। कब कौन सी परिस्थिति में इस धरती पर आग उगलने लगजाय कहना कठिन है परन्तु यह विश्वास भी दृढ़ है कि भारत का अधिकतम जन देशभक्त–राष्ट्रभक्त व भारतमाता की जय बोलने वाला है। यह जन संघर्षक्षम भी है और सजग भी है। इस कारण कह सकते हैं आज भी भारत सुरक्षित है। इस पर भी मैं कहूँगा उदासीनता व उपेक्षा ठीक नहीं है। हर समय सजग, सतर्क नागरिक के रूप में रहेंगे तो भारत के किसी कोने में शत्रु ने छेड़छाड़ की तो उसे समय पर ठिकाने लगाना संभव हो सकेगा। सक्षम, समर्थ राष्ट्र हरकाल में सुरक्षित राष्ट्र बना रहता है। समय रहते हम भारत को आध्यत्मिक व भौतिक शक्तियों से युक्त बनावें, भारत को आधुनिकतम दिव्यास्त्रों से परिपूर्ण बनावें। यही समय की मांग है यही विजय पर्व का संदेश व राष्ट्रधर्म है।

विजयादशमी (इस बार 11 अक्टूबर) पर

jansewa@gmail.com

पलायन नहीं पराक्रम
पश्चिम बंगाल में जिलाश: समीक्षा

'समीक्षा के अनुसार पश्चिम बंगाल के साथ– साथ देश के अन्य 17 राज्यों में हिन्दू का पलायन जारी है। पश्चिम बंगाल के प्रायः सभी जिलों में विशेष करके मुर्शिदाबाद, मालदा, उ0–द0 दिनाजपुर, नदिया, 24 परगना, हावडा, वर्धमान में अधिक पलायन जारी है।' विहिप के के0संयुक्त महामंत्री सुरेन्द्र जैन ने बताया कि जो कार्यकर्ता पलायन रोकने का प्रयास कर रहे हैं, उन्हें धमकी दी जा रही है। दुर्गा पूजा में भी बाधा डालने का प्रयास हो रहा है। हिंदुओं के पलायन का कारण बताते हुए उन्होंने कहा कि महिलाओं पर अत्याचार, हिन्दु घरों में चोरी, अधिक पैसा देकर जमीन खरीदना, जबर्दस्ती दखल, हिन्दू इलाकों में भय का वातावरण निर्माण। इन सब कामों में प्रशासन द्वारा तुष्टिकरण। 10 सितंबर को कलकत्ता महाजाति सदन के सभागृह में अनुष्ठित सेमीनार में उन्होंने उक्त बातें कहीं।

इस गोष्ठी में विहिप के के0 उपाध्यक्ष जगन्नाथ जी साही, पू0 विशोकानंद जी, रन्तिदेव सेन गुप्त, मोहित राय, भारत सेवाश्रम संघ के पूज्य संत गुरूपदानंद ने भी अपना मत प्रकट किया।

इस सेमिनार के पूर्व द0बंगाल के 10 जिलों में परिषद ने सर्वे किया तथा संबंधित प्रशासनिक अधिकारियों को जिलानुसार ज्ञापन दिया गया।

पं.बंगाल में सर्वाधिक पलायन होने वाले जिला मुर्शिदाबाद के बहरमपुर शहर के ग्राण्ड हाल में 11 सितं. को अनुष्ठित गोष्ठी में विहिप के के0 उपाध्यक्ष जगन्नाथ शाही ने कहा कि प. बंगाल की मुख्यमंत्री सुश्री ममता बनर्जी की मुस्लिम तुष्टिकरण और वोटबैंक की राजनीति का यह परिणाम है। विजयादशमी के दिन मूर्ति विसर्जन सायंकाल 4 बजे से पहले विसर्जित करने का फतवा मुस्लिम तुष्टिकरण ही है, कारण अगले दिन मुर्हरम है।

विहिप के प्रांतीय उपाध्यक्ष अमिय सरकार ने घोषणा की कि इस प्रकार के जन– जागरण के कार्यक्रम द0बंगाल के प्रत्येक जिलों में आयोजित होंगे।

प्रस्तुतकर्ता : दिनेश गोयल
विशेष संपर्क विभाग– कार्यालय प्रमुख

पटना में ४ सितम्बर को हेल्थ ऐम्बैसडर ट्रेनिंग कैम्प आयोजित किया गया जिसमें २१२ हेल्थ ऐम्बैसडर तथा ३० डाक्टर्ज उपस्थित रहे । मंच पर डॉक्टर प्रवीण भाई तोगडिया, इंडिया हेल्थ लाइन के दक्षिण बिहार के अध्यक्ष्य प्रख्यात कैन्सर रोग विशेषज्ञ डॉक्टर जीतेन्द्र सिंह, पद्मश्री डॉक्टर एस एन आर्य विहिप अध्यक्ष, आइ एम ए बिहार जे अध्यक्ष डॉक्टर सहजानंद जी, पद्मश्री डॉक्टर आर एन सिंह वरिष्ठ डॉक्टर नरेंद्र प्रसाद, पटना क्षेत्र के क्षेत्र संगठन मंत्री श्री राजेंद्र प्रसाद, ओमप्रकाश गर्ग, केंद्रीय मंत्री श्री मिलिंद जी उपस्थित रहे।

आनेस्थेसिस्ट डॉक्टर शरद नंदन और डेंटिस्ट डॉक्टर मनीषा ने मंच संचालन किया। डॉक्टर शीला शर्मा, डॉक्टर आर एन सिंह, पटना नगर संघचालक डॉक्टर पवन अग्रवाल, डॉक्टर शरद नंदन जी ने ब्लड प्रेशर, अनामिआँ, शुगर एवं मोटापा के बारे में जानकारी दी। न्यूरो फिजिशन डॉक्टर राजीव रंजन जी ने धन्यवाद ज्ञापित किया ।

sibabratavhp@yahoo.com

नई दिल्ली। 21 अगस्त को संकट मोचन हनुमान मंदिर, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर विहिप– विशेष संपर्क विभाग के तत्वावधान में सामान्य ज्ञान एवं रंग भरो प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 152 बच्चों ने भाग लिया। 25 अगस्त को प्रतिभागी बच्चों को परिषद के महामंत्री चम्पत राय ने पारितोषिक वितरण किया।

प्रस्तुति : दिनेश गोयल, विशेष संपर्क विभाग (कार्यालय प्रमुख)

पृष्ठ 12 का शेषांश.....

मदर टेरेसा की मृत्यु के पश्चात् भी चंदा उगाही का कार्य चलता रहे और धर्मान्तरण करने में सहायता मिले इसके लिए एक नया ड्रामा रचा गया। पोप जॉन पॉल को मदर को "सन्त" घोषित करने में जल्दबाजी की गई। सामान्य रूप से संत घोषित करने के लिये जो पाँच वर्ष का समय (चमत्कार और पवित्र असर के लिये) दरकार होता है, पोप ने उसमें भी ढील दे दी।

पश्चिम बंगाल की एक क्रिश्चियन आदिवासी महिला जिसका नाम मोनिका बेसरा था। उसे टीबी और पेट में ट्यूमर हो गया था। बेलूरघाट के सरकारी अस्पताल के डॉ. रंजन मुस्ताफ उसका इलाज कर रहे थे। उनके इलाज से मोनिका को काफी फायदा हो रहा था और एक बीमारी लगभग ठीक हो गई थी। अचानक एक दिन मोनिका बेसरा ने अपने लॉकेट में मदर टेरेसा की तस्वीर देखी और उसका ट्यूमर पूरी तरह से ठीक हो गया। मिशनरी द्वारा मोनिका बेसरा के ठीक होने को चमत्कार एवं मदर टेरेसा को संत के रूप में प्रचारित करने का बहाना मिल गया। यह चमत्कार का दावा हमारी समझ से परे है।

जिन मदर टेरेसा को जीवन में अनेक बार चिकित्सकों की आवश्यकता पड़ी थी। उन्हीं मदर टेरेसा की पा से ईसाई समाज उनके नाम से प्रार्थना करने वालों को बिना दवा केवल दुआ से, चमत्कार से ठीक होने का दावा करता होना मानता है। अगर कोई हिन्दू बाबा चमत्कार द्वारा किसी रोगी के ठीक होने का दावा करता है तो सेक्युलर लेखक उस पर खूब चुस्कियां लेते है। मगर जब पढ़ा लिखा ईसाई समाज ईसा मसीह से लेकर अन्य ईसाई मिशनरियों द्वारा चमत्कार होने एवं उससे सम्बंधित मिशनरी को संत घोषित करने का महिमा मंडन करता है तो कोई भी सेक्युलर लेखक दबी जुबान में भी इस तमाशे को अन्धविश्वास नहीं कहता।

जब मोरारजी देसाई की सरकार में सांसद ओमप्रकाश त्यागी द्वारा धर्म स्वातंत्रय विधेयक के रूप में धर्मान्तरण के विरुद्ध बिल पेश हुआ तो इन्ही मदर टेरेसा ने प्रधानमंत्री को पत्र लिख कर इस विधेयक का विरोध किया और कहा था कि ईसाई समाज सभी समाज सेवा की गतिविधियाँ जैसे कि शिक्षा, रोजगार, अनाथालय आदि को बंद कर देगा। अगर उन्हें अपने ईसाई मत का प्रचार करने से रोका जायेगा। तब तत्कालीन प्रधानमंत्री देसाई ने कहा था इसका अर्थ क्या यह समझा जाये की ईसाइयों द्वारा की जा रही समाज सेवा एक दिखावा मात्र है। उनका असली प्रयोजन तो धर्मान्तरण हैं। देश के तत्कालीन प्रधान मंत्री का उत्तर ईसाई समाज की सेवा के आड़ में किये जा रहे धर्मान्तरण को उजागर करता है।

इस लेख को पढ़कर हिन्दुओं का धर्मान्तरण करने वाली मदर टेरेसा को कितने लोग संत मानना चाहेंगे?

देवगिरि प्रांत में विहिप कार्याध्यक्ष

16/08/2016 को डॉ. प्रवीणभाई तोगड़िया का परभणी में आगमन हुआ। ठीक सुबह 09.00 बजे परभणी के सांसद संजय उर्फ बंडुजी जाधव इन्होंने विसावा कॉर्नर पर उनका स्वागत किया। भाजपा की ओर से आनंदजी भरोसे और अजय जी गव्हाणे इन्होंने उनका स्वागत किया। डॉक्टर सुरवसे और धर्म प्रसार विभाग की ओर से गजानन नलगे इन्होंने उसका स्वागत किया।

अक्षर –जोती पाठशाला के सौ. अय्यर मेडम इन्होंने उनकी आरती उतारी इस स्वागत समारोह के पश्चात वि.हि.प. के शहर अध्यक्ष सुरेन्द्र मनोहरराव शहाणे इनके घर चायपान किया गया। इसके पश्चात मोंढा मारोती मंदिर यहाँ पर प्रमुख व्यापारी डॉक्टर एवं कार्यकर्ताओं के साथ बैठक ली गई। ''आंतकवाद को जड़ से मीटा देना चाहिए'' यह संदेश डॉ0 प्रवीणभाई तोगड़िया इन्होंने दिया।

ठीक 12.15 बजे डॉ0 प्रवीणभाई तोगड़िया इनका गंगाखेड आगमन हुआ वहाँ वि.हि.प. की और से उनका स्वागत किया विविध पक्ष के पदाधिकारियों की और से उनका स्वागत किया गया इसके साथ वहाँ मोटार सायकल की रेली का भी आयोजन किया गया था।

डसके पश्चात इसाद इस गाँव के ढोल नगाड़ों के साथ संघ परिवार की और से उसका स्वागत किया गया। आगे राणीसावरगांव में विश्व हिन्दू परिशद और ग्राम पंचायत की और से 21 तोफो की सलामी देकर बड़े जोर–शोर से उनका स्वागत किया गया। पूरा गाँव केसरीया ध्वजों से बेनरों से और मंडपों से केशरी रंग वाला दीखाई दे रहा था।

राणीसावरगांव यहाँ पर विश्व हिन्दू परिशद की आर्थिक सहायता और मुम्बई के गोरक्षा प्रमुख लक्ष्मीनारायण चांडक इनकी मदत से राणीसावरगांव की नदी की खुदाई की गई। उस नदी पात्र को चौढ़ा और गहरा बनाया गया। इसमें 80फीट चौढ़ाई 10 से 15 फीट गहराई और 2 कि.मी. लंबाई विश्व हिन्दू परिशद की और से की गई।

इस वजह से राणीसावरगांव और

आसपास के छह गाँवों को इसका लाभ होगा। यहाँ बहोत बंधारे नैसर्गीक पध्दत से बनाए गए है। इसमें करोड़ो लीटर पानी जमा हुआ है। इस बंधारे का जल पूजन डॉ. प्रवीणभाई तोगड़िया इनके हाथ से किया गया और उसे स्व. अशोक जी सिंहल का नाम दिया गया।

टाकलवाडी नाम गाँव को स्वातंत्र्य पूर्व काल से रास्ता नही था विश्व हिन्दू परिशद की और से एक किलोमीटर लंबा कच्चा रास्ता बनाया गया और उसका भूमी पूजन डॉ. प्रवीणभाई तोगड़िया जी के हाथों से किया गया। इसी के साथ –साथ पांगरी गाँव में बजरंग दल की शाखा के फलक का अनावरन उसके हाथों से किया गया।

विश्व हिन्दू परिशद से निगडीत 'शामची आई' इस गौशाला का उद्घाटन मा. प्रवीणभाई तोगड़िया जी से निवृत्ती भिमनपल्लेवार इसके खेत में किया गया।

आगे गोवंश किसान मेला का आयोजन किया था। उस मेले में 57 गाँवों के 3200 किसान उपस्थित थे। इस कार्य{म में विश्व हिन्दू परिशद देवगिरी प्रांताध्यक्ष संजयजी बारगजे, मुंबई गौरक्षा प्रमुख लक्ष्मीनारायणजी चांडक यह भी मौजूद थे।

मा. धर्मराव बिराजदार और हेमंत शिंदे सोलापुर उपस्थित थे। विश्व हिन्दू परिशद देवगिरी प्रदेश मंत्री अनंतजी पांडे उपस्थित थे। गौरक्षा प्रमुख देवगिरी प्रांत राजेश जी जैन भी उपस्थित थे।

इस कार्यक्रम का आयोजन शिवप्रसाद जी कोरे बजरंग दल देवगिरी प्रांत संयोजक इन्होंने किया था। इस कार्यक्रम में ह.भ.प. नारायण महाराज पालमकर ह.भ.प. कतारे महाराज गंगाखेडकर हेमंत त्रिवेदी सुनील चावरे यह भी उपस्थित थे। **क्रमश:**

हिंसक मुस्लिम भीड़ से ६० सेकंड में निपटने का ये इसरायली तरीका भारत को अपनाना चाहिए?

इजराइल ने, जरूरत पड़ने पर, आतंकियों को दुनिया के कोने २ में ढूंढ़कर मौत केघाट उतारा है! परमाणु बम बनाने की कोशिश करनेवाले इस्लामिक देशों पर सीधे हवाई हमला बोला है। अभी एक वीडियो इंटरनेट पर वायरल हो रहा है जिसमें, इसरायली सुरक्षा बलों को, एक बड़ी व भड़की

शेष पृष्ठ 24 पर....

ऋषियों के विचार में संपूर्ण अस्तित्व एक सचेतन सत्ता की हलचल रूप था। इसी एक सचेतन सत्ता को चेतना के सात स्तरों में वर्गीकृत कर शाक्त सम्प्रदाय के योगियों द्वारा कुण्डलिनी शक्तियोग आध्यात्मिक ज्ञान मार्ग का संदेश दिया गया।

हैं तथा उन्हें विजयशाली बनाते हैं। आगे वरूणदेवता का क्रम बनता है जो हमारे अंदर एक वृहत् पवित्रता एवं विशालता को प्रकट कर समस्त पाप तथा मिथ्यात्व का विनाश करता है। इनके साथ मित्र देवता का स्थान आता है।

मित्र देवता हैं प्रेम और समग्रबोध की एक प्रकाशमय शक्ति जो हमारे विचारों, कर्मों तथा आवेगों को सामंजस्यपूर्ण कर आगे ले जाती है। इनके पश्चात् क्रम में अर्यमा देवता का स्थान आता है जो सुस्पष्ट– विवेचनशील अभिप्सा तथा प्रयत्न की एक अमर शक्ति हैं। इनके पश्चात् भग देवता का स्थान आता है जो सब वस्तुओं का समुचित उपयोग करने की एक सह, सुखमय अवस्था हमारे अंदर निर्माण करते हैं तथा पाप, भ्रांति और पीड़ा के दुःस्वप्न का निवारण करते हैं। ये चारों देवगण मित्र, वरूण, अर्यमा तथा भय सूर्य के सत्य की शक्तियां हैं।

इन देवगणों के साथ युगल अश्विनों का नाम आता है जो हमारे शरीर की सुखमय अवस्था के प्रबल कारण कहे जाते हैं। सत्य प्रकाश प्रदाता एवं वृत्रहंता के रूप में इन्द्र के सहायक हैं मरुत्। मरुत् संकल्प की तथा वातिक या प्राणिक शक्तियां हैं। ये समस्त विचार और वाणी के पीछे उसके प्रेरक के रूप में रहते हैं तथा परम चेतना के प्रकाश, सत्य और आनंद को पहुंचने के लिए युद्ध करते हैं।

वेद की स्त्री शक्तियां

उपर्युक्त देवपुरुषों के साथ वेद में स्त्रीलिंगी शक्तियां भी हैं क्योंकि परमेश्वर पुरुष तथा स्त्री दोनों हैं। देवता भी या तो सक्रिय करने वाली आत्माएं हैं या निष्प्रतिरोध रूप से कार्य सम्पन्न करने वाली तथा यथाक्रम विन्यास करनेवाली शक्तियां हैं।

इनमें प्रथम हैं **अदिति,** देवताओं की जन्मदातृ शक्ति तथा इनके साथ सत्य चेतना की पांच शक्तियां भी हैं– **मही अथवा भारती** जो सब सामग्रियों को दिव्य श्रोत से हमारे हित के लिए ले आती है। **इडा** है परम सत्य की वह दृढ मूल वाणी जो हमें सत्य का सक्रिय दर्शन प्रदान करती हैं। **सरस्वती** है इस सत्य की वहती हुई धारा और उसकी अन्तःप्रेरणा की वाणी। सरभा अन्तर्ज्ञान की देवी हैं। अन्त में **दक्षिणा** पांचवी शक्ति है जिनका कार्य ठीक– ठीक विवेचन तथा हवि का उचित विनियोग करना है। इसके अतिरिक्त अन्य देवताओं का स्थान भी है जो हैं– पर्यन्त, द्युलोक की वर्षा देने वाला। दधिक्रावा, अग्नि की एक शक्ति, दिव्ययुद्धश्वा अर्बुध्न्य, आधार का रहस्यमय सर्प।

यद्यपि वेद के रहस्य को उद्घाटित करने के उपनिषद् तथा ब्राह्मण ग्रंथों का महत्वपूर्ण स्थान आता है। फिर भी इसे सर्वसुलभ करने में वेदान्त, गीता तथा पौराणिक विधा का महत्व भी अतुलनीय हैं। इन सबकी विवेचना के मूल में **ऋग्वेद** का यह मंत्र है जिसमें स्वतः कहा गया है कि एक ही दिव्य व्यापक सत्ता के केवल भिन्न नाम एवं अभिव्यक्तियां हैं जो अपने स्वयं की शक्ति से विश्व को अतिक्रमित किए हुए हैं–

इन्द्रं मित्रं वरूणमग्नि माहुरथो दिव्यःस सुपर्णो गरूत्मान्।
एकं सद्विप्रा बहुधा बदन्त्यग्नि यमं मातरिश्वानमाहुः।।
(ऋ.वे. 1– 164– 46)

परमेश्वर की आनंदमयी चिच्छक्ति के स्वरूपबोधक मंत्र वेद में अनेक स्थलों में स्पष्ट परिलक्षित होते हैं। ऋग्वेद–6 61–4 में मंत्र है–

प्रणो देवी सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती धीनामवित्र्यवतु।

अखण्ड आनंद और चैतन्य की स्फुरित करनेवाली शक्ति को रहस्यनाम अदिति देवतामयी कहा जाता है। इस रहस्यमय शक्ति को सत्पूर्ण भूतों की जननी बतलायी गई हैं। जैसे– सूर्य दिव्य सत्य के स्वर्णिम प्रकाश के प्रतिमूर्ति है उसी प्रकार उषा हमारे मानवीय अज्ञान की रात्रि पर परम प्रकाश के उन्नीलन की प्रतिमूर्ति है। इन्हें ऋग्वेद **श्रेष्ठतमा व्युम्च्छ** की संज्ञा देती है जो सर्वोच्चय, अव्यन्त महिमामय उषा का स्वरूप धारण का शत्रु को दूर भगाती हुई, सत्य की संरक्षिका, सत्य में उत्पन्न, आनंद से पूर्ण, सर्वोच्च सत्य का उच्चारण करने वाली, सब वरों में परिपूर्ण होकर देवत्वों के जन्म तथा आविर्भाव को लाती है।

यावयद्वेषा ऋतपा ऋतेजाः सुम्नावरी सूनृता ईरयन्ती।
सुमंगलीर्बिभ्रती देववीनिमिहाद्योषः श्रेष्ठतमा व्युच्छ।।
(ऋ.वे. 1.113.12)

आगे भी कहा जाता है कि देवमाता उषा, अनंत की शक्ति यज्ञ से जाग्रत होनेवाली विशाल दृष्टि रूप उषा आत्मा के विचार को अभिव्यक्त कर देती है एवं जो कुछ भी परमेश्वर की संकल्पशक्ति से उत्पन्न हुआ है उस सब में हमें विश्वव्यापी जन्म प्रदान करती है–

माता देवनामदितेरनीकं यज्ञस्य केतुर्बृहती वि भाहि।
प्रशस्तिकृद ब्रह्मणे नो व्युच्छा नो जने जनय विश्ववारे।।
(ऋ.के. 1.113.19)

ऋग्वेद दशम मण्डल के 110 वें सूक्त में तीन देवियों के नाम से आवाहन किया जाता है––

आ नो यज्ञं भारती तूयमेतु इला मनुष्यदिहचेतयन्ती।
तिस्त्रो देवीर्बर्हिरेदं स्योनं सरस्वती स्वपसःसदन्तु।।
ऋ. 10.11.110.8)

भारती शीघ्रता से हमारे यज्ञ में आवें। इला मनुष्योचित प्रकार से हमारी चेतना को जागृत करती हुई आवें। सरस्वती आवें। ये तीनों देवियां सुखमय आसम ग्रहण करें तथा यज्ञकर्म अच्छी प्रकार से सम्पन्न करें। यहां ये तीनों देवियां अन्तःप्रेरणा की शक्ति के सजातीय हैं। सरस्वती वाणी है, अन्तःप्रेरणा है और भारती एवं इला भी ज्ञान के भिन्न–भिन्न प्रकाश किरणें हैं। ये 'सत्यम', 'ऋतम', 'वृहत' हैं। इसके अतिरिक्त वे 'सूनृता' सुखमय सत्य की वाणी है।

सरस्वती के विषय में ऋग्वेद कहती

है–'चोदयित्रीसूनृतानाम्' अर्थात् सुखमय सत्य की प्रेरयित्री है। साथ ही हम यह भी विचार करें कि इन देवियों के विषय में कहा गया है कि ये मनुष्य के लिए सुख 'मयस्' को उत्पन्न करती हैं।

ऋग्वेदोक्तमधुच्छन्दस् के तीसरे सूक्त के ये तीन ऋचायें जिनमें सरस्वती का आह्वान किया गया है, विचारणीय है।

पवका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।
यज्ञं वष्टु धियावसुः।
चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम्।
यज्ञं दधे सरस्वती।।
महोअर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना।
धियो विश्वा वि राजति।।

इन मंत्रों द्वारा ऋषि ने सरस्वती से स्तुति की है कि वे सत्य की वह शक्ति है जिसे हम अन्तःप्रेरणा कहते हैं। यह सत्य से आने वाली अन्तःप्रेरणा हमें संपूर्ण मिथ्यात्व से छुड़ाकर पवित्र कर देती है (पावका)। इस स्थल में विचार का सत्य दर्शन के सत्य का निर्माण करता है।

यह है वेद का केन्द्रीभूत विचार रहस्य सरस्वती, अन्तःप्रेरणा, प्रकाशमय समृद्धियों से परिपूर्ण है (वाजेभिर्वाजिनीवती) वह विचार की सम्पत्ति से ऐश्वमर्यवती (धियावसुः) हैं। वह मनुष्य की चेतना को जागृत कर देती है (चेतन्तीसुमतीनाम्)। वह मनुष्य की इस चेतना के अंदर उन सत्यों के उदय होने को प्रेरित कर देती है (चोदयित्रीसूनृतानाम्) जो मनुष्य के लिए परमसुख के द्वारों को खोल देती है।

इस प्रकार वेद में सभी देवता महामाया प्रकृति की प्रकृति शक्ति हीं शक्ति का प्रतीक रूप में कार्य भी भूमिका में निमित्त मात्र होते हैं। सभी कार्यों में प्रवृत्त रहती है। इस संदर्भ में देवी सूक्त एवं श्रीसूक्त का अर्थ सनातन धर्मावलंबी नित्य स्मरण में बनाए रखे हैं।

एक मात्र चैतन्य शक्ति से संसार लीला

वेदों की चैतन्य शक्तियां उपनिषदों के ऋषि द्वारा इस प्रकार वर्णित है :–

काली करली च मनोजवा च सुलोहिता या च सुधूम्रवर्णा।
स्फुलिंनी विश्वरूची च देवी लेलायमाना इति सप्तजिह्वा।।
(मुण्डकोऽपनिषद्)

अर्थात् काली, कराली, मनोजवा, सुलोहिता, सुधूम्रवर्णा, स्फुलिंगी तथा देदीप्यमान विशषरूची ये सप्त अग्नि जिह्वाएं परमेश्वर की अभिन्न शक्तियां प्रतीक रूप में अग्नि के नाम से कार्यरूप में दिखती हैं।

श्वेताश्वतरोपनिषद् में संदेश है––

त्वं स्त्री त्वं पुमानसि त्वं कुमार उतवा कुमारी।
त्वं जीर्णो दण्डेन वंचसि त्वंजातो भवसि विश्वतोमुखः।।

इस मंत्र में ऋषि द्वारा एकमात्र परमेश्वर से अभिन्न आवाल बृद्ध जीवमात्र, पुरुष, बालक– बालिका इत्यादि में उन्हीं की आत्मा, चेतना, आत्मशक्ति संचरित है। वे विश्वरूप हैं। इसी के अध्याय– 1 का मंत्र है––

ते ध्यान योगानुगता अपश्यन्देवात्मशक्तिं स्वगुणैर्निगूढ़ाम्।।

ऋषि द्वारा योगविधि के अवलम्बन से स्वयं के गुणों से आच्छादित ब्रह्मस्वरूप आत्मशक्ति का साक्षात्कार हुआ।

केनोऽपनिषद् में एक आख्यान द्वारा परमात्म शक्ति से संचालित ब्रह्माण्ड रहस्य को उजागर किए गए हैं जिसमें यह दर्शाया गया है कि परमेश्वर ने देवगणों के लिए विजय प्राप्त की जिसमें देवगण महिमा मण्डित हुए। देवगण समझते हैं कि यह विजय देवगण की है। ब्रह्म, परमेश्वर देवगण के अहंभाव को जान गए और यज्ञ रूप में देवगणों के सामने प्रकट होते हैं। उन्होंने जातवेद अग्नि से पूछा कि यह पता करो कि तुम कौन हो।

अग्नि का उत्तर था कि वह समस्त वस्तुओं को जानने वाला है तथा इस पृथ्वी के समस्त वस्तुओं को भस्म कर देने का सामर्थ्य उसमें है। उस यक्ष ने उसके सम्मुख एक तिनका रख दिया और कहा कि इसे जलाओ। अग्नि उस तिनके को जलाने में असफल हुआ। वह निश्चेष्ट होकर वापस आ गया और कहा कि यह बलशाली यक्ष क्या है ?पूर्ण की भांति वायु यक्ष के समीप जाते हैं। यक्ष ने वायु से भी अग्नि जैसा प्रश्न किया। वायु का उत्तर था कि वह वही मातरिश्वा है, मातृतत्व में विस्तीर्ण होता है। इस पृथ्वी पर विराजमान प्रत्येक वस्तु को वह अपने लिए अधिकृत कर सकती है। यक्ष ने वायु के सामने एक तृण का तुकडा रख दिया और कहा कि इसे ले जाओ। वायु तिनका ले जाने में विफल होकर निष्चेष्ट वापिस हो गया और बताया कि वह बलशाली यक्ष क्या है, वह नहीं जान सका।

अब वायु इन्द्र से कहते हैं कि वह जाकर यक्ष का पता करें?इन्द्र के आने पर यक्ष तिरोहित हो जाते हैं। यक्ष को अन्तर्धान होते देख इन्द्र ने उसी आकाश में अनेक रूपों में भासित हो रही हिमवान की पुत्री उमा के पास आकर जिज्ञासा की कि वह बलशाली यक्ष क्या था?उमा ने इन्द्र से कहा कि यह यक्ष शाश्वत–तत्व ब्रह्म है। यह ब्रह्म की ही विजय है जिसमें तुम महिमा को प्राप्त करोगे। केनोऽपनिषद् का यही ब्रह्म श्रीकृष्णमुख से कहते हैं गीता प्रवक्ता नाम से––

मयाध्यक्षेण प्रकृतिःसूयते सचराचरम्।
हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते।।
गीता– 9– 10)

और यही शाश्वत कार्यकारणीशक्ति महामाया श्वेताश्वतरोऽपनिषद् के मंत्र से भी सम्पुष्ट है––

मायांतुप्रकृतिंविद्यान्मायिनंतुमहेश्वरम् (श्वेता.– 4/10)

वेद– सप्तक आध्यात्मिक रहस्य

सात की संख्या का वैदिक सम्प्रदाय में बड़ा महत्व है। जैसे सात आनंद, सप्त रत्नानि, सात ज्वालाएं, सप्त अर्चिषः, सप्त ज्वालाः, सप्तधीतयः, सप्तगावः, सप्त मातरः, सप्त धोनवः। इससे यह तथ्य उजागर होता है कि वैदिक विचार में इनके लिए जो आधार चुना गया, उसके पीछ अध्यात्म ज्ञान था। ऋषियों के विचार में संपूर्ण अस्तित्व एक सचेतन सत्ता की हलचल रूप था। इसी एक सचेतन सत्ता को चेतना के सात स्तरों में वर्गीकृत कर शाक्त सम्प्रदाय के योगियों द्वारा कुण्डलिनी शक्तियोग आध्यात्मिक ज्ञान मार्ग का संदेश दिया गया। महर्षि शाण्डिल्य भक्तिसूत्र में कहा है––'चेत्याचितोर्नतृतीयम' चिति (शक्ति), चित (ब्रह्म) से भिन्न कुछ भी संसार में नहीं है।

क्रमशः

सरकार को राम मंदिर व गाय के मुद्दे पर समय देना चाहिए: विहिप महामंत्री

नई दिल्ली। इन्द्रप्रस्थ विश्व हिन्दू परिषद दिल्ली प्रांत का तीन दिवसीय कार्यकर्ता अभ्यास वर्ग 2 सितम्बर से 4 सितम्बर 2016 तक उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के बीच उद्यमिता विद्यापीठ चित्रकूट, सतना में सम्पन्न हुई। वर्ग में 161 शिक्षार्थियों ने बौद्धिक, शारीरिक व सांगठनिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस दौरान संगठन के विभिन्न अधिकारियों ने अलग–अलग विषयों पर शिक्षार्थियों का मार्गदर्शन किया।

2 सितम्बर को उद्घाटन सत्र में विश्व हिन्दू परिषद के अखिल भारतीय उपाध्यक्ष संत दिव्य जीवनदास जी, क्षेत्रीय संगठन मंत्री करुणा प्रकाश, प्रांत संगठन मंत्री अनिल कुमार ने अभ्यास वर्ग के महत्व व राष्ट्र निर्माण में विश्व हिन्दू परिषद की भूमिका पर प्रकाश डाला।

3 सितम्बर 2016 को विहिप के अन्तरराष्ट्रीय महामंत्री चम्पत राय जी ने विश्व हिन्दू परिषद के आगामी कार्यक्रम व 6 नवम्बर 2016 को गोपाष्टमी पर हो रहे कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी देते हुए कार्यकर्ताओं के जिज्ञासा का समाधान भी बहुत ही शालीनता के साथ किया। एक कार्यकर्ता के जिज्ञासा का समाधान करते हुए उन्होंने कहा कि देश में सरकार सही दिशा में कार्य कर रही है। हमें संयम व धैर्य रखना चाहिए और सरकार को राम मंदिर व गाय के मुद्दे पर समय देना चाहिए।

4 सितम्बर को समारोप सत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ दिल्ली के प्रांत प्रचारक मा. हरीश जी ने परम पूज्य डा. हेडगेवार जी एवं गुरु जी के विचारों और उनके जीवन चरित्र का व्याख्यान कर

कार्यकर्ताओं को उनके विचारों के अनुसार चलने का आह्वान किया।

महेन्द्र रावत
– मीडिया प्रभारी
vhpmediadelhi94@gmail.com

पृष्ठ 21 का शेषांश.....

हुई मुसलमानों को भीड़ को, केवल साठ सेकंड में खदेड़ते हुए दिखाया गया है

वीडयो चलाने से पहले, वॉल्यूम जरा कम कर लें! हाँ, धमाकों की गूंज सुनकर, भारत के देशद्रोहियों के दिल जरूर दहलेंगे!

हमारा मानना है कि हिंसक भीड़ को, इजराइल का इस तरह खदेड़ने का तरीका जबरदस्त है! भारत भी यदि ऐसा करने लग जाये, तो शायद फिर कोई दोबारा कर्फ्यू का उल्लंघन करके, सेना के जवानोंपर पत्थर, पेट्रोल बम और ग्रेनेड फेंकने नहीं आएगा!

ये देख कर, देशभक्तों के चेहरे चहकेंगे और देशद्रोहियों के दिल दहलेंगे। देख कर बताइये, क्या ऐसा सुपर–इसरायली–फार्मूला भारत में भी अपनाया जाना चाहिए या नहीं? विडियों के लिए देखें – (http://hindutva.info)

गाय रखने वालों को मुफ्त चारा देगी सरकार

नई दिल्ली, 8 सितंबर। केंद्रीय वन मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने शनिवार को कहा कि दूध देना बंद कर देने वाली गायों को बेचने से किसानों को रोकने के लिए सरकार गाय रखने वालों को मुफ्त चारा उपलब्ध कराने की योजना पर विचार कर रही है।

राष्ट्रीय गोधन महासंघ द्वारा केंद्रीय कृषि मंत्रालय के सहयोग से आयोजित गो संरक्षण पर एक सम्मेलन में जावड़ेकर ने कहा कि यह योजना ऐसी गायों की देखभाल के लिए तैयार की जा रही है, जो दूध देना बंद कर देती हैं। इससे चारे के लिए मवेशियों को जंगल ले जाने से वन क्षेत्र को होने वाले नुकसान से भी बचा जा सकेगा। (भाषा)

शोक समाचार

एकल– अभियान प्रमुख माधवेन्द्र सिंह के पू0 पिताश्री लालजी सिंह का स्वर्गवास 8 सितम्बर को अर्जुनपुर, बक्शी का तालाब, लखनऊ (उ0प्र0) में हो गया। स्व0 लालजी सिंह बख्शी का तालाब, तहसील संघचालक का दायित्व निर्वहन कर रहे थे।

सम्पर्क : madhavendra@outlook.com

दिवंगत आत्मा को 'हिन्दू विश्व' द्धारा विनम्र श्रद्धांजलि!

शारदीय नवरात्र
(इस बार 1 अक्टूबर से) पर विशेष

मार्कण्डेय पुराण में क्लोनिग विषय का वर्णन

रक्तबीज का रक्त जब जमीन पर गिरा तो सफेद रक्त कोशिकाओं का न्यूक्लियस उसी के अंडे से फ्यूज कर नया भ्रूण बनाता रहा। नई क्लोनिंग साइंस पद्धति इसी सिद्धांत पर काम करती है। रक्तबीज के रक्त से तैयार भ्रूण को जमीन से कार्बन, नाइट्रोजन, फास्फोरस, सल्फर और आक्सीजन समेत तमाम पोषक तत्व मिलते रहे।

मार्कण्डेय पुराण में श्री दुर्गा सप्तशती के आठवें अध्याय में देवी दुर्गा रक्तबीज नाम के जिस राक्षस से युद्ध कर रही थीं। उसके रक्त की एक–एक बूंद से हर बार नया राक्षस पैदा होने का वर्णन श्लोकों में आता है। उस राक्षस का अंत करने के लिए देवी को अपनी अन्य शक्तियों का आह्वान करना पड़ता है, तब सारी शक्तियां मिलकर रक्तबीज के रक्त की एक– एक बूंद को पृथ्वी पर गिरने से रोकते हुए राक्षस का अंत करती हैं।

अभी तक आधुनिक युग के शोधकर्ताओं व बुद्धिजीवियों द्वारा श्री दुर्गा सप्तशती में वर्णति यह वृत्तांत पुराणों की कपोल कल्पना और अतिशयोक्ति का एक उदाहरण माना जाता रहा है। अब जबकि यह साबित होने जा रहा है कि आधुनिक विज्ञान जहां आज पहुंचा है, भारतीय सभ्यता अपने उस उत्कर्ष को पहले ही प्राप्त कर चुकी थी, तब यह भी जानना आश्चर्य में नहीं डालता कि रक्त की मात्र एक ही बूंद से व्यक्ति का Clone बनाया जा सकता है और तो और उसे म्यूटेशंस के जरिए थोड़े ही समय में कई गुना तक किया जा सकता है, विशाल आकार भी दिया जा सकता है।

हाल ही में मेरठ के छात्र प्रियांक भारती और गरिमा त्यागी द्वारा तैयार एक शोधपत्र को चीन के अंतरराष्ट्रीय जैव प्रौद्योगिकी सम्मेलन के लिए चुना गया है। और यह शोध अमेरिका की इनोवेटिव जर्नल ऑफ मेडीकल साइंस के आगामी

अंक में छपने जा रहा है। प्रियांक भारती और गरिमा त्यागी ने अपने प्रयोग में रक्तबीज को कपोल कल्पना मानने से इंकार करते हुए बताया है कि रक्तबीज कोई चमत्कार नहीं बल्कि अति विकसित विज्ञान का एक उदाहरण था जो सबसे पहला Clone कहा जाता है। भारतीय पौराणिक कथानकों की सत्यता सिद्ध करते हुए इन शोध छात्रों ने अपने प्रयोग के माध्यम से बायोटेक्नोलॉजिकली दावा किया है कि रक्त एवं शुक्राणुओं के बीच 95 प्रतिशत समानता पाई जाती है।

ऐसे में रक्त से भी जीवन की उत्पत्ति संभव है। रक्त और वीर्य के न्यूक्लियस प्रोटीन समान होते हैं। यही प्रोटीन्स डीएनए संजाल के जरिए वंशानुगत गुण–दोषों के साथ बच्चों में स्थानांतरित होते हैं। किसी व्यक्ति के उभयलिंगी होने पर यह संभावना और बढ़ जाती है कि वह शुक्राणु और अंडाणु बनाने की समान क्षमता रखता है। रक्तबीज का रक्त जब जमीन पर गिरा तो सफेद रक्त कोशिकाओं का न्यूक्लियस उसी के अंडे से फ्यूज कर नया भ्रूण बनाता रहा। नई क्लोनिंग साइंस पद्धति इसी सिद्धांत पर काम करती है। रक्तबीज के रक्त से तैयार भ्रूण को जमीन से कार्बन, नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, सल्फर और ऑक्सीजन समेत तमाम पोषक तत्व मिलते रहे।

जापान में रक्त की एक बूंद से 600 चूहे पैदा करने का कुछ दिनों पहले एक रिकॉर्ड बनाया गया था। बायोटेक्नोलॉजी का यह प्रयोग क्लोनिंग में काफी समय ये उपयोग होता रहा है मगर भारतीय शोधकर्ताओं का यह पहला उत्साहजनक प्रयास है जो हमारी ही सभ्यता और विज्ञान से हमें पुनः परिचित करवा रहा है। प्रियांक भारती और गरिमा त्यागी का यह प्रयास सनातन (हिंदू) धर्म के उस कथन की पुष्टि करता है जिसमें धर्म और विज्ञान को एक ही सिक्के के दो पहलू बताया गया है।

मार्कण्डेय पुराण में श्री दुर्गा सप्तशती या अन्य पौराणिक उदाहरणों से असहज होने वालों के लिए यह पचा पाना असंभव है कि ऋषि दधीचि की वज्र जैसी हड्डियां हों या उनसे वज्रास्त्र बनाने के लिए उनका त्याग, राक्षसों का आसमान की ओर उड़ना और युद्ध करते हुए जमीन पर आना, रावण के एक मस्तिष्क का दस सिरों की भांति द्रुत गति से काम लेना, पुष्पक विमान, सीता का भूमि से उपजना, एक ही भ्रूण के सौ हिस्से होकर कौरवों के रूप में हमारे सामने आना, बिना शारीरिक संपर्क के ही कुंती के पांच पुत्र और उभयलिंगी व्यक्ति होना या ऋषियों के शरीर से किसी बच्चे का जन्म या फिर कृष्ण जन्म के समय योगमाया का भ्रूण प्रत्यारोपण जैसी घटनायें सिर्फ कहानियांभर नहीं हैं।

यह उस समय में आनुवांशिकी विज्ञान का चरमोत्कर्ष था जिसमें बाकायदा स्टेम सेल्स, वीर्य, रक्त, मज्जा, हारमोन्स, आईवीएफ तकनीक, म्यूटेशंस और हाइब्रडि तकनीक का बेहतरीन उपयोग था। किसी भी सभ्यता के चरमोत्कर्ष के बाद

शेष पृष्ठ 26 पर....

ऋग्वेद पर हाथ रखकर शपथ लेने वाले जितेश गढिया ने हाउस ऑफ लॉर्ड्स में रचा इतिहास

पिछले वर्ष नवंबर में लंदन के वेंबले स्टेडियम में मोदी के भाषण को गढिया ने ही लिखा था।

नई दिल्ली। भारतीय मूल के बैंकर जितेश गढिया ने ब्रिटेन के हाउस ऑफ लॉर्ड्स में सबसे कम उम्र के ब्रिटिश सांसद के रूप में शपथ ली। प्रधानमंत्री मोदी और ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री डेविड कैमरन के करीबी माने जाने वाले जितेश ने इस दौरान एक और इतिहास रच दिया। उन्होंने प्राचीन वैदिक ग्रंथ ऋग्वेद पर हाथ रखकर शपथ ली। बता दें कि ब्रिटिश संसद के अपर हाउस में भारतीय मूल के लगभग 20 सांसद हैं।

इस दौरान उन्होंने कहा कि मैं ऐसे समय संसद में शामिल हो रहा हूं, जब ब्रेग्जिट के बाद ब्रिटेन अपने इतिहास के एक महत्वपूर्ण मोड़ पर है। मैं ब्रिटेन के फाइनेंशल सर्विसेज सेक्टर के लिए भविष्य में बेहतर संभावनाएं सुनिश्चित करने में मदद करना चाहता हूं। मेरा फोकस भारत और ब्रिटेन सहित हमारे अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संबंध मजबूत करने में योगदान देने पर भी होगा। मैं संसद और सांसदों को ब्रिटिश भारतीयों के साथ भी जोडने की कोशिश करूंगा।

गुजरात से संबंध रखने वाले गढिया 1972 में दो वर्ष की आयु में उस समय ब्रिटेन आए थे, जब युगांडा से लगभग 50,000 एशियाई लोगों को निकाला गया था। पिछले वर्ष नवंबर में लंदन के वेंबले स्टेडियम में मोदी के भाषण को गढिया ने ही लिखा था। ऋग्वेद को दुनिया का सबसे प्राचीन धार्मिक ग्रंथ माना जाता है, जो अभी भी उपयोग किया जाता है। इसका इतिहास 1500 बीसी से शुरु होता है।(13 सित.)

(http://googleweblight.com)

धर्मांतरण कराने वालों की जगह होटवार जेल : मुख्यमंत्री रघुबर दास

रांची : झारखंड–मुख्यमंत्री रघुवर दास ने कहा कि कोई लोभ, लालच और भय दिखाकर धर्मांतरण कराता है, तो यह गैर संवैधानिक है। हम संविधान का पालन करने वाले हैं और राजधर्म का पालन करेंगे। धर्मांतरण कराने वालों पर सरकार कड़ी कार्रवाई करेगी। ऐसे लोगों की जगह होटवार जेल है। मुख्यमंत्री रविवार को केंद्रीय सरना समिति की ओर से आयोजित करम मिलन समारोह में बोल रहे थे।

सरकार धर्मांतरण बिल लाए, ताकि राज्य में धर्मांतरण न हो। सरकार आदिवासियों का विकास कर रही है, किंतु एक खास वर्ग लोगों को बरगला रही है ।

– प्रभात खबर, 20 सितम्बर

पृष्ठ 25 का शेषांश.....

उसे प्रति के नियमानुसार नीचे आना ही होता है और यही नियति हमारी इस पौराणिक सभ्यता की भी रही। नतीजा यह है कि आज हजारों साल बाद यदि कोई कहता है कि कभी हमारी सभ्यता इतनी विकसित थी तो यकायक विश्वास नहीं होता और ज्यादातर लोग इसे अंधविश्वास की अतिवादिता कहकर स्वयं अपने ही धर्म को संशय से देखने लगते हैं। वे तभी विश्वास करते हैं जब क्लोनिंग व म्यूटेशंस का उदाहरण एक्स मैन और हल्क जैसी हॉलीवुड फिल्में पेश करती हैं।(12 सितं.)

(http://hindi.revoltpress.com)

'ईरान के नेता मुस्लिम नहीं'; पारसी की संतान

एजेंसी रियाद/तेहरान, 08 सितंबर। हज यात्रा शुरू होने से पहले सऊदी अरब और ईरान के बीच तकरार बढ़ गई है। दोनों देशों ने एक–दूसरे के खिलाफ जोरदार हमला बोला है। सऊदी के ग्रैंड मुफ्ती अब्दुल अजीज अल शेख ने कहा है कि ईरान के नेता मुसलमान नहीं; बल्कि पारसी की संतान हैं।

www.amar ujala.com

कोलकाता में हिन्दुओं के पलायन सम्बन्धी सर्वेक्षण रिपोर्ट जारी करते विहिप-केन्द्रीय संयुक्त महामंत्री डॉ. सुरेन्द्र जैन

खतौली (उत्तर प्रदेश) में तुलसी शोभायात्रा

दुर्गा वाहिनी के तत्वावधान में विदिशा (गंजबासौदा, मध्य प्रदेश) में आयोजित राधाष्टमी कार्यक्रम (10 सित0)।

email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-1/4031/2015-17
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
मुद्रण- तिथि : 28.09.16
प्रेषण तिथि : 29-30 (अग्रिम-पाक्षिक)

मध्यप्रदेश शासन

निवेश मध्य प्रदेश
वैश्विक निवेशक सम्मेलन

मध्यप्रदेश

मेक इन इंडिया का प्रवेश द्वार

श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

वैश्विक निवेशक सम्मेलन
22-23 अक्टूबर, 2016
ब्रिलिएंट कन्वेंशन सेंटर, इंदौर

अधिक जानकारी वेबसाइट
www.investmp.com
पर उपलब्ध

TRIFAC | CII | EY

सरल प्रक्रिया... असीमित अवसर...

आवाहन : मध्यप्रदेश माध्यम/2016

D79660

प्रकाशक व मुद्रक परमानन्द मनोहर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'साइबर क्रिएशन्स' जे.ई.-9, खिड़की एक्सटेंशन, मालवीय नगर, नई दिल्ली-17 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 से प्रकाशित। सम्पादक : मानवेन्द्र नाथ पंकज